कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Postal R.No.MP/BPL/525/2025-27 RNI No. Raj HIN/2000/3239, डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन सोमवार, 9 फरवरी 2026 वर्ष-26 अंक-20 मूल्य-12/- कुल पृष्ठ-12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

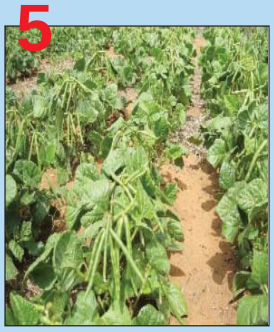

जायद में लगाएं मूंग

6

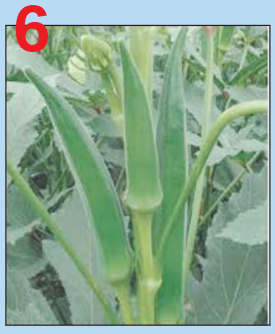

भिण्डी लगाकर पाएं अधिक लाभ

7

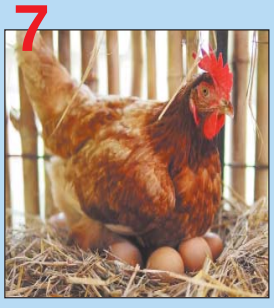

अण्डा उत्पादन को कम करने वाले पोषण से जुड़े रोग

8

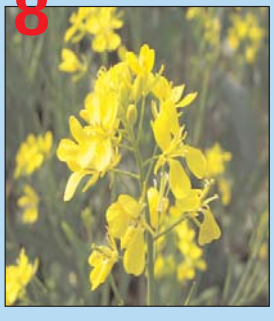

समस्या-समाधान

वीबी जी राम जी कानून से गांवों का बुनियादी ढांचा होगा मजबूत - श्री शर्मा

मुख्यमंत्री ने किया ग्राम उत्थान शिविर का अवलोकन

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि किसान, श्रमिक और पशुपालकों सहित अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक जनकल्याणकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश के हर गिरदावर सर्किल पर ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों के माध्यम से सरकार स्वयं पात्र लाभान्वितों तक पहुंच रही है और संबंधित कार्यों का त्वरित निस्तारण किया जा रहा है। उन्होंने ग्रामीणों से इन शिविरों का अधिक से अधिक लाभ लेने का आह्वान किया।

श्री शर्मा रविवार को रामगढ़ के ग्राम बहाला में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने अलवर शहर के लिए 152 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं की सौगात दी। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं से जुड़े लोकार्पण और शिलान्यास कार्य शामिल हैं।

गांव बन रहे आत्मनिर्भर और सशक्त-मुख्यमंत्री ने कहा कि गांवों में देश की आत्मा बसती है। इसी मूल मंत्र के अनुरूप प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गांवों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की रूपरेखा बनाई है। उनके द्वारा प्रारंभ किए गए स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गांवों को खुले में शौच से मुक्ति मिल रही है।

विकसित भारत का संकल्प होगा साकार-

श्री शर्मा ने कहा कि वीबी जी राम जी कानून में ग्रामीणों को वर्ष में 100 दिन के स्थान पर 125 दिन का रोजगार मिलेगा। इस कानून के अंतर्गत सभी कार्य पूर्ण पारदर्शिता के साथ और आधुनिक तकनीक के माध्यम से होंगे, जिससे श्रमिकों की मजदूरी सीधे उनके खाते में पहुंचेगी। स्थायी संपत्तियों का निर्माण होगा, जिससे गांवों का बुनियादी ढांचा सुदृढ़ होगा।

1 हजार 800 ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन, ग्रामीणों को मिली राहत-

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब तक 1800 से ज्यादा ग्राम उत्थान शिविर लगाकर ग्रामीणों को केन्द्र एवं राज्य की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया गया है। इन शिविरों में 1 लाख 34 हजार से ज्यादा सॉइल हेल्थ कार्ड और 65 हजार से अधिक स्वामित्व कार्ड के वितरण के साथ ही 37 हजार किसान क्रेडिट कार्ड के आवेदन लिए गए हैं। इसी प्रकार लगभग साढ़े 6 लाख पशुओं का उपचार और पीएम सूर्य घर योजना के तहत 36 हजार से अधिक का पंजीकरण किया गया है।

1 लाख युवाओं को सरकारी नियुक्तियां-

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब तक 1 लाख से अधिक सरकारी पदों पर नियुक्तियां दी जा चुकी हैं और 1 लाख 54 हजार से अधिक पदों पर भर्तियां प्रक्रियाधीन हैं। वहीं, इस वर्ष के लिए 1 लाख सरकारी पदों पर भर्ती का कैलेंडर जारी किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के दो वर्ष के कार्यकाल में एक भी पेपर लीक नहीं हुआ। सभी प्रतियोगी परीक्षाएं एवं नियुक्तियां पारदर्शिता के साथ हुई हैं। श्री शर्मा ने युवाओं से मन लगाकर पढ़ाई करने का आह्वान किया। शेष पेज 3 पर

कृषि और ग्रामीण विकास का बजट 4.35 लाख करोड़ से अधिक : श्री शिवराज

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने केंद्रीय बजट 2026-27 को विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत की मज़बूत नींव रखने वाला ऐतिहासिक और अभूतपूर्व बजट बताया है। श्री चौहान ने कहा, 'यह बजट विकसित भारत के सपने को साकार करने का महाकाव्य है। यह समाज की समृद्धि और संकल्पों की सिद्धि का बजट है - यह डेवलप्ड इंडिया का डायनामिक बजट है। किसान, युवा, महिला और गरीब - देश की इन चारों जातियों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का यह बजट एक नया अध्याय लिख रहा है।'

कृषि बजट में उल्लेखनीय वृद्धि

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि विभाग का बजट बढ़ाकर इस वर्ष 1,32,561 करोड़ रुपये कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि कृषि शिक्षा और अनुसंधान, विशेषकर आईसीएआर सहित, के लिए 9,967 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिससे शोध और नवाचार को बल मिलेगा। किसानों के लिए उर्वरक सब्सिडी पर उन्होंने कहा कि सस्ता खाद और उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए 1,70,944 करोड़ रुपये की सब्सिडी का प्रावधान है, ताकि उत्पादन की लागत कम हो और किसान को राहत मिले।

ग्रामीण विकास बजट में 21% की वृद्धि

श्री चौहान ने बताया कि ग्रामीण विकास विभाग के बजट में इस वर्ष 21 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास और कृषि विभाग को जोड़कर देखें तो ग्रामीण विकास और कृषि मंत्रालय का सम्मिलित बजट अब 4 लाख 35 हज़ार 779 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है, जो गांव और किसान के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास के कुल बजट में अकेले 'विकसित भारत जी राम जी' योजना के लिए राज्यों के अंशदान सहित लगभग 1.51 लाख करोड़ रुपये से अधिक का प्रावधान किया गया है।

श्री सिंह ने कहा कि लखपति दीदी योजना की सफलता को आगे बढ़ाते हुए बजट में सेल्फ हेल्प एंटरप्रेन्योर 'SHE मार्ट' की व्यवस्था की गई है।

हर ज़िले में बहनों के उत्पादों को बेचने के लिए एक प्लेटफॉर्म के रूप में कम्युनिटी ओन्ड रिटेल आउटलेट स्थापित होंगे, जहाँ स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण बहनों द्वारा तैयार उत्पादों को नया बाज़ार मिलेगा।

मेडिसिनल प्लांट्स से किसानों को सीधा लाभ

श्री चौहान ने कहा कि नेशनल फाइबर स्कीम के तहत सिल्क, वूल और जूट जैसे फाइबर पर फोकस किया गया है, जिससे इनसे जुड़े किसानों को सीधा लाभ मिलेगा।उन्होंने यह भी कहा कि आयुष मंत्रालय में मेडिसिनल प्लांट्स के सर्टिफिकेशन और एक्सपोर्ट से संबंधित प्रावधानों का फायदा औषधीय पौधे उगाने वाले किसानों की आमदनी बढ़ाने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि परंपरागत फसलों के साथ साथ नारियल, कोको, काजू और चंदन की लकड़ी जैसी उच्च मूल्य फसलों के लिए भी स्पष्ट प्रावधान किए गए हैं।

अमलाहा (ICARDA) से केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का बड़ा संदेश

देश में दलहन उत्पादकता बढ़ाने हुआ क्रांति का आगाज

(विशेष प्रतिनिधि)

अमलाहा (सीहोर, म.प्र./कृषक जगत)। मध्य प्रदेश के सीहोर ज़िले के अमलाहा स्थित खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र (FLRP) से आज देश की दलहन नीति और किसान-केंद्रित कृषि विमर्श का नया अध्याय जुड़ा और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में देशव्यापी दलहन क्रांति का आगाज़ हुआ। यहाँ आयोजित राष्ट्रीय दलहन परामर्श एवं रणनीति बैठक में एक ही मंच पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान के साथ ही केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी-श्री रामनाथ ठाकुर तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, राजस्व मंत्री म.प्र. श्री करण सिंह वर्मा, कृषि मंत्री म.प्र. श्री एदल सिंह कंषाना, श्रीमती कृष्णा गौर राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार म.प्र. एवं कई राज्यों के कृषि मंत्री, शीर्ष वैज्ञानिक, ICAR-ICARDA के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान, एफपीओ, बीज और दाल मिल प्रतिनिधि जुटे और संदेश साफ़ था: दलहन में आत्मनिर्भर भारत का रोडमैप अब खेतों के बीच से तय होगा, दिल्ली के फाइलों के कमरों से नहीं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर में इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र) अंतर्गत खाद्य दलहन अनुसंधान प्लेटफार्म के प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ किया।

यह पहल दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता, किसानों की आय वृद्धि और खेती को वैज्ञानिक आधार देने की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जा रही है।

'खेती खेत में समझी जाती है, दिल्ली में नहीं'

कृषि मंत्री ने कहा कि खेत से दूर बैठकर खेती को समझा नहीं जा सकता। इसी सोच के साथ पहली बार कृषि मंत्रालय की महत्वपूर्ण बैठक दिल्ली से बाहर गाँव में आयोजित की गई, ताकि नीति और ज़मीन के बीच की दूरी खत्म हो।

किसानों को बनाएंगे सशक्त

म. प्र. के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अन्य राज्यों से आए कृषि मंत्रियों से भी आग्रह किया कि भारत की कृषि उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर दलहन उत्पादन बढ़ाने तथा किसानों को सशक्त बनाने की दिशा में ठोस कदम है। 'खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र' में ICARDA के नवनिर्मित प्रशासनिक भवन, प्रशिक्षण केंद्र तथा अत्याधुनिक प्लांट टिशुकल्चर प्रयोगशाला का लोकार्पण किया। 'राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' अंतर्गत आयोजित 'राष्ट्र स्तरीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन' के अवसर पर 'पल्सेस मिशन पोर्टल' का शुभारंभ भी किया गया। 'राष्ट्रीय दलहन मिशन' के अंतर्गत मध्यप्रदेश को रू. 354 करोड़ का बजट मिला है। दलहन उत्पादन में मध्यप्रदेश, देश में पहले स्थान पर है। इस मिशन का सर्वाधिक लाभ प्रदेश के किसानों को मिलेगा।

दलहन उत्पादकता बढ़ाना सरकार का लक्ष्य

मसूर, चना, उड़द, बटरा और मूंग जैसी दलहनों की पैदावार बढ़ाने पर विशेष फोकस रहेगा। किसानों को ऐसे बीज उपलब्ध कराए जाएंगे जो अधिक उत्पादन देने के साथ रोगमुक्त भी हों।

ICAR-ICARDA की आधुनिक प्रयोगशालाएँ गढ़ेंगी खेती का भविष्य

इकार्डा में स्थापित होने वाली प्लांट जीनोमिक्स, टिश्यू कल्चर, ब्रीडिंग और पैथोलॉजी जैसी अत्याधुनिक लैब में शोध कर बेहतर बीज तैयार किए जाएंगे। नियंत्रित तापमान में बीज उत्पादन कर साल में तीन बार उत्पादन संभव बनाया जाएगा। प्रयोगशालाओं में कृत्रिम वातावरण बनाकर तेज़ी से बेहतर बीज विकसित होंगे। फंगस, वायरस और मिट्टी जनित रोगों पर शोध कर रोगमुक्त फसलें तैयार की जाएंगी।

किसानों के बीच होगा बीज विमोचन

कृषि मंत्री ने घोषणा की कि अब कोई भी बीज दिल्ली में रिलीज नहीं होगा। अलग-अलग राज्यों में, किसानों के बीच जाकर नए बीजों का विमोचन किया जाएगा।

क्लस्टर मॉडल से संगठित खेती को बढ़ावा

क्लस्टर में जुड़ने वाले किसानों को बीज किट दी जाएगी। आदर्श खेती के लिए प्रति हेक्टेयर रु. 10,000 की सहायता प्रदान की जाएगी।

बीज से बाज़ार तक सरकार की सीधी पकड़

सरकार का फोकस केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहेगा। किसानों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य मिले, इसके लिए संपूर्ण व्यवस्था बनाई जाएगी।

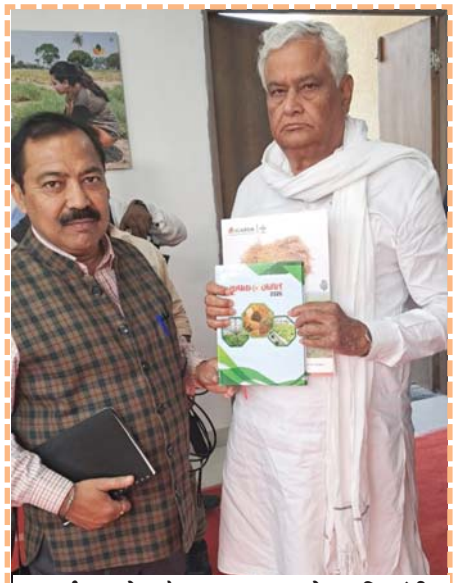

कार्यक्रम के दौरान राजस्थान के कृषि मंत्री श्री किरोड़ीलाल मीणा को कृषक जगत डायरी 2026 भेंट करते हुए अतुल सक्सेना

क्लस्टर स्तर पर दाल मिल : रु. 25 लाख तक की सब्सिडी

दाल उत्पादन वाले क्षेत्रों में ही दाल मिल स्थापित करने को प्रोत्साहन मिलेगा। दाल मिल लगाने पर भारत सरकार रु. 25 लाख तक की सब्सिडी देगी।

देशभर में 1,000 दाल मिलें, म.प्र. में 55

इस मिशन के तहत देश में 1,000 दाल मिलें स्थापित की जाएँगी, जिनमें से 55 दाल मिलें मध्यप्रदेश के विभिन्न क्लस्टरों में खोली जाएँगी, ताकि उत्पादन, प्रोसेसिंग और बिक्री एक ही क्षेत्र में हो सके।

उपस्थित रहे अन्य राज्यों के कृषि मंत्री

श्री आशीष नंदकिशोर जायसवाल कृषि मंत्री महाराष्ट्र, श्री रामकृष्ण यादव कृषि मंत्री बिहार, श्री श्याम सिंह राणा कृषि मंत्री हरियाणा, श्री रामविचार नेताम कृषि मंत्री छत्तीसगढ़, श्री कनकवर्धन सिंह देव उपमुख्यमंत्री एवं कृषि मंत्री उड़ीसा, श्री सूर्यप्रताप शाही कृषिमंत्री उ.प्र., श्री किरोड़ीलाल मीणा कृषि मंत्री राजस्थान, श्री रमेशभाई भूराभाई कटारा कृषिमंत्री गुजरात।

अधिकारीगण

श्री संजय कुमार अग्रवाल संयुक्त सचिव कृषि भारत सरकार, डॉ. मांगीलाल जाट डीजी आईसीएआर, श्री शिवकुमार अग्रवाल निदेशक इकार्डा, श्री अली आबूसाबा महानिदेशक इकार्डा।

दलहन पर राष्ट्र स्तरीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन-ईकार्डा सीहोर

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर के इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र) में आयोजित राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन अंतर्गत राष्ट्रीय - स्तरीय परामर्श कार्यक्रम में पुस्तकों का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को सीहोर के इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र) में आयोजित राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन अंतर्गत राष्ट्र स्तरीय परामर्श कार्यक्रम में श्री संजय अग्रवाल संयुक्त सचिव कृषि मंत्रालय की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

राजस्थान के पत्थरों की विश्व में अनूठी पहचान-श्री शर्मा

मुख्यमंत्री ने इंडिया स्टोनमार्ट का किया उद्घाटन

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान के पत्थरों की विशिष्टता की विश्व पटल पर अनूठी पहचान है। देशभर के अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों, किलों, महलों में राजस्थान का पत्थर उपयोग में लाया गया है। अब राजस्थान का पत्थर उद्योग नई ऊंचाइयां छूने के लिए पूरी तरह तैयार है तथा हम इस उद्योग को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी उद्यमियों से प्रदेश में मिलकर पत्थर उद्योग को देश में सिरमौर बनाने की अपील की।

श्री शर्मा गुरुवार को जयपुर के जेईसीसी में आयोजित इंडिया स्टोन मार्ट के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सीडॉस, रीको और लघु उद्योग भारती को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि इंडिया स्टोनमार्ट प्रदर्शनी नए राजस्थान के संकल्प का प्रतीक है। यह आयोजन भारतीय प्राकृतिक पत्थर उद्योग की शक्ति और सामर्थ्य को प्रदर्शित करने का एक वैश्विक मंच बन चुका है। उन्होंने कहा कि इस स्टोन मार्ट का पहली बार 26 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में वेबसाइट निर्माण, डिजिटल मोबाइल एप्लीकेशन तथा विशाल क्षेत्र में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

प्रधानमंत्री ने उद्योगों को दी नई दिशा-

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी और कुशल नेतृत्व में आज भारत वैश्विक विनिर्माण का केंद्र बनकर उभर रहा है। 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' की महत्वाकांक्षी परिकल्पना ने उद्योगों को नई दिशा और नया विश्वास दिया है। उन्होंने कहा कि भारतीय ग्रेनाइट, संगमरमर और सैंडस्टोन दुनियाभर में प्रसिद्ध है। भारत पत्थर निर्यातक के साथ मूल्य संवर्धन और नवाचार का केंद्र भी बन रहा है। साथ ही, हमारी कंपनियां वैश्विक संस्थानों के रूप में तेजी से उभर रही हैं। यह हमारे उद्योग के लिए तेज गति से बढ़ने का सुनहरा अवसर है।

राजस्थान निवेश के लिए सबसे सुरक्षित और बेहतरीन जगह -

श्री शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार ने पत्थर उद्योग सहित सभी प्रकार के उद्योगों के लिए निवेश-अनुकूल और नीति-स्थिर वातावरण तैयार करने का काम किया है। सिंगल विंडो सिस्टम, औद्योगिक बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण, लॉजिस्टिक्स में सुधार, प्रक्रियाओं का सरलीकरण जैसे नवाचारों से उद्यमी बिना परेशानी के यहां आसानी से स्वयं का उद्यम स्थापित कर सकता है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने अनेक नीतियां लागू कीं है जिससे निवेश करना आसान

हुआ है और आर्थिक विकास, नवाचार एवं रोजगार सृजन के भी कई नए मार्ग खुले हैं। उन्होंने कहा कि राइजिंग राजस्थान इनवेस्टमेंट समिट के तहत किए गए 35 लाख करोड़ के एमओयू में से 8 लाख करोड़ के कार्य शुरू हो चुके है।

श्रमिकों की सुरक्षा एवं सम्मान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता-

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में विपुल खनिज संपदा है। यहां कुल 85 तरह के खनिज उपलब्ध है। मकराना का संगमरमर, किशनगढ़ का मार्बल सहित राजसमंद, जालौर, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के पत्थर दुनियाभर में प्रसिद्ध है। राजस्थान के पास न केवल समृद्ध संसाधन हैं, बल्कि सदियों पुरानी शिल्पकला की परंपरा भी है। साथ ही, हमारे कारीगरों की कला विश्वविख्यात है। हमारे पत्थर को पर्यावरण के अनुकूल, टिकाऊ और गुणवत्तापूर्ण निर्माण सामग्री के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति मिल रही है। उन्होंने कहा कि उद्योग की असली ताकत हमारे कुशल कारीगर और मेहनतकश श्रमिक हैं। उनके हाथों की कारीगरी ही साधारण पत्थर को अद्भुत कला में बदलती है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने स्टोन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले श्रीराम मेगा स्ट्रक्चर के निदेशक श्री अनिल चौधरी तथा एवर शाइन मार्बल्स के प्रबंध निदेशक श्री मुकेश चंद्र अग्रवाल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने इंडिया स्टोनमार्ट 2026 प्रदर्शनी का फीता खोलकर उद्घाटन किया एवं स्टॉल्स का अवलोकन किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री मदन दिलावर, मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास, लघु उद्योग भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री प्रकाशचंद, आर.के. मार्बल्स के चैयरमेन श्री अशोक पाटनी, ईरान और टर्की के प्रतिनिधिगण, सहित लघु उद्योग भारती के वरिष्ठ पदाधिकारीगण, रीको एवं सीडॉस के अधिकारीगण, बड़ी संख्या में उद्यमी, वास्तुकार एवं श्रमिक मौजूद रहे।

अरावली पर्वतमाला पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण - मुख्य सचिव

जयपुर। अरावली ग्रीन वॉल कार्यक्रम एवं एनसीआर क्षेत्र के हरितीकरण के संबंध में मंगलवार को शासन सचिवालय में मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक का आयोजन हुआ। इस दौरान प्रधानमंत्री के सलाहकार द्वारा दिए गए निर्देशों के क्रम में अरावली पर्वत श्रृंखला क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जल एवं मृदा संरक्षण कार्य तथा हरित आवरण विस्तार हेतु प्रस्तावित एवं प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा की गई। साथ ही आगामी वित्तीय वर्ष हेतु हरियालो राजस्थान अभियान के तहत विभिन्न विभागों के आवंटित वृक्षारोपण लक्ष्यों की विभागवार समीक्षा एवं अरावली के अन्तर्गत आने वाले राजस्थान के जिलों में हरितीकरण गतिविधियों को सुदृढ़ करने पर भी चर्चा हुई।

मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास ने कहा कि अरावली पर्वतमाला न केवल राजस्थान बल्कि पूरे देश के लिए पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अरावली पर्वतमाला का सर्वाधिक क्षेत्र राजस्थान में स्थित है, जिससे राज्य की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार अरावली पर्वतमाला के सरंक्षण लिए प्रतिबद्ध है। केन्द्र सरकार ने राजस्थान के अरावली जिलों में 52503.20 हैक्टेयर पौधारोपण का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने जिला कलेक्टरों को विभिन्न विभागों से समन्वय स्थापित करकर समयबद्ध एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जुलाई से अभियान की प्रभावी शुरुआत-

मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि अभी मानसून में समय है, इसलिए सभी संबंधित विभाग समय रहते आवश्यक तैयारियां पूर्ण करें और पौधारोपण की कार्ययोजना को धरातल पर उतारें। उन्होंने कहा कि पौधारोपण केवल औपचारिकता न रहे, बल्कि उसकी दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित की जाए।

थर्ड पार्टी मूल्यांकन की व्यवस्था-

मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास ने अभियान की पारदर्शिता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए थर्ड पार्टी मूल्यांकन की व्यवस्था लागू करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नियमित निरीक्षण एवं मूल्यांकन से वास्तविक प्रगति का आकलन संभव होगा और किसी भी स्तर पर लापरवाही को रोका जा सकेगा। इससे अभियान की विश्वसनीयता और परिणाम दोनों सुदृढ़ होंगे।

व्यापक जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश-

मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि अरावली ग्रीन वॉल अभियान को जन आंदोलन का रूप देने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाए। इसके अंतर्गत स्कूलों, कॉलेजों, स्वयंसेवी संगठनों, ग्राम पंचायतों, उद्योगों और आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि जब तक समाज का प्रत्येक वर्ग इससे नहीं जुड़ेगा, तब तक अभियान अपने पूर्ण उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा।

मिट्टी जांच से बदली खेती की तस्वीर, घटी लागत बढ़ा मुनाफा

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में जयपुर जिले में ग्राम उत्थान शिविरों का प्रभावी एवं सफल आयोजन किया जा रहा है। ये शिविर आमजन के लिए राहत और समाधान का सशक्त माध्यम बनकर उभर रहे हैं।

जयपुर जिले की पंचायत समिति झोटवाडा की ग्राम पंचायत मुण्डियारामसर अंतर्गत ग्राम किशोरपुरा काकरोदा के कृषक श्री नारायण लाल शर्मा वर्ष 2023 तक परंपरागत पद्धति से बिना मिट्टी जांच कराए खेती करते थे। मिट्टी की वास्तविक स्थिति की जानकारी के अभाव में उर्वरकों का संतुलित उपयोग नहीं हो पाता था, जिससे उत्पादन और आय सीमित बनी हुई थी।

कृषि पर्यवेक्षक श्रीमती सावित्री कुमावत द्वारा मिट्टी जांच की महत्ता से अवगत कराते हुए श्री शर्मा के खेत से मिट्टी का नमूना लिया गया। जांच उपरांत उन्हें सोयल हेल्थ कार्ड उपलब्ध कराया गया, जिसमें खेत की मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों एवं उनकी कमी की स्पष्ट जानकारी दी गई। कार्ड में सुझाए गए पोषक तत्वों के अनुसार ही उर्वरकों का उपयोग किया गया।

मिट्टी जांच के आधार पर श्री शर्मा ने गेहूं, बाजरा एवं सब्जियों की खेती की, जिसके परिणामस्वरूप फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। खेत में कार्बनिक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए उन्होंने सड़ी हुई गोबर खाद, जीवामृत एवं धनजीवामृत जैसे जैविक आदानों का प्रयोग किया। यही जैविक पद्धति उन्होंने अपने बगीचे में भी अपनाई, जिससे उत्पादन के साथ-साथ मुनाफा भी बढ़ा।

वैज्ञानिक एवं जैविक खेती अपनाने के परिणामस्वरूप खेती की लागत में लगभग 40 प्रतिशत तक की कमी आई, जबकि आय में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा संदीप शर्मा मे. संदीप इन्टरप्राइजेस, एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित एवं पेपर प्रिंट इंडस्ट्रीज 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : रीतेश कोंडले. इस अंक का मूल्य रुपये 12/- वार्षिक शुल्क रुपये 600/- भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रं. Raj/HIN/2000/3239

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, उसे बदलना है।
- डॉ. राधाकृष्णन

रबी के बाद जायद की तैयारी

रबी की मुख्य फसल गेहूं की कटाई के साथ-साथ एक लम्बा - चौड़ा रकबा खाली हो जायेगा। कुछ दशक पहले कटाई उपरांत खेत खाली पड़े रहते थे। ग्रीष्मकाल में जुताई करके खरीफ बुआई की अवधि में जमीन को मानो आराम दिया जाता था परंतु हमारी बढ़ती जनसंख्या, घटता रकबा और भोजन की मांग की पूर्ति हेतु हमें कुछ सीमित रकबा जायद के लिये तैयार करना होगा। एक तरह से कृषक जो जायद लगाना चाहते हैं के लिये अतिरिक्त कार्य, एक तरफ खलिहानों में रखे अनाज की गहाई, उड़ावनी, भंडारण का कार्य तो दूसरे तरफ खेतों में जुताई का कार्य, तो तीसरा कार्य इस जायद की मूंग/उड़द की बुआई का कार्य परंतु इन सभी कार्यों को सफलता से निपटाना किसी संगम नहाने से कम महत्व का कार्य नहीं मानना चाहिये क्योंकि सभी कार्य वर्तमान की बदलती परिस्थितियों की चुनौतियों को सफलता से सामना करने के लिये शक्ति, ज्ञान और संसाधन उपलब्ध कराते हैं। काम की अधिकता से कभी भी घबराना नहीं चाहिये क्योंकि विश्व में केवल कृषि उत्पादन ही एक ऐसा कार्य है जिसमें रुकने के लिये कोई स्थान नहीं थम सकते हैं, रुक नहीं सकते फिर हमेशा से उक्त सभी कार्यक्रम करते भी आये हैं जरूरत तो केवल इतनी ही है कि विभिन्न कार्यों की प्राथमिकता को पहचाना जाये। खेत काटने के बाद खलिहान में फसल फैलाकर सुखाने के बीच के समय का उपयोग जायद के लिये बोने वाले रकबे में पलेवा देकर छोड़ा जा सकता है। गरमी है तापमान के कारण दो-तीन दिन में बतर आ जायेगी। गहाई का कार्य करते-करते जायद के रकबे की बुआई निपटाई जा सकती है क्योंकि विलम्ब करने से जायद की फसल के पकने में देरी होगी और

जून के द्वितीय सप्ताह तक उसकी कटाई, गहाई, विपणन, भंडारण के कार्य भी निपटाने होंगे। जायद की फसलों की बुआई के बाद उसके रखरखाव में केवल सिंचाई आवश्यक होती है इस बीच अनाज को अच्छी तरह सुखाकर भंडारण भी किया जा सकता है। किसी भी कीमत पर जायद की बुआई उपरांत बचे रकबे में गेहूं की नरवाई जलाने का प्रयास नहीं किया जाये बल्कि खेत की गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ दिया जाये। गहरी जुताई से अनेकों लाभ हैं भूमि में छुपी व्याधियों के अवशेष भीषण गर्मी में तपकर नष्ट हो जाते हैं भूमि के अंदर छुपे विभिन्न जीवाणुओं को प्रकाश, हवा सुलभ हो जाती है जिससे उनके पलने-पुसने के लिये उपयुक्त वातावरण बन सके और वर्षा काल में गिरते जल का संग्रहण कम से कम 9-10 इंच तक भूमि में गहराई तक हो सके। कहना ना होगा परंतु यह यर्थात है कि भूमि के भीतर जितनी अधिक से अधिक गहराई तक नमी का संरक्षण हो सकेगा उतना ही अधिक लाभ आने वाली फसल के विकास के लिये हो सकेगा। नरवाई जलाने की बात तो हो-हल्ले में अंजाम को बिना सोचे-समझे करने वाली बात होती है, सस्ता, सुन्दर परंतु कोई नहीं जानता कि कितना खतरनाक होता है खेत में माचिस की काड़ी लगाना, अनियंत्रित लपटों की चपेट में गांव तक आ सकते हैं और जान-माल की हानि की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा भूमिगत मित्र जीवाणुओं का खात्मा तो ध्यान रहे नरवाई में पानी देकर नरम करें फिर गहरी जुताई करके उसे खेतों में मोड़ दें ताकि कालान्तर में अच्छी खाद बनकर खेतों की उर्वराशक्ति में इजाफा किया जा सके। नरवाई की समस्या कम्बाईन से फसल काटने के उपरांत ही आती है। कटाई के तुरंत बाद रोटावेटर का उपयोग करके खेत बनाने से भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ जाती है। रोटावेटर से खेत की तैयारी की लागत में 20-25 प्रतिशत तक की बचत होती है। कटाई उपरांत प्रबंध का अपना अलग महत्व होता है जिसे गंभीरता से, वरीयता से, प्राथमिकता निर्धारित करके ही किया जा सकता है इसे एक संगम में नहाने जैसा पवित्र कार्य ही मान कर किया जाये तो अच्छे परिणाम मिल सकेंगे।

आम बजट 2026 : ग्रामीण समृद्धि की रीढ़ बनेगा पशुधन

● प्रमोद भार्गव

ग्राम और ग्रामीण की समृद्धि की रीढ़ अब केवल खेती-किसानी तक सीमित नहीं रह गई है, इस आम बजट में सरकार ने पशुधन से पशुपालकों और दुग्धउत्पादकों की आय बढ़ाने के ठोस उपाय कर दिए हैं। इससे रोजगार बढ़ने के साथ दैनिक और मासिक आमदनी में स्थिरता आएगी। खेती पर बढ़ते संकट कम होंगे। पशुधन, मुर्गी व मत्स्य पालन ग्रामीणों की आजीविका के भरोसे के सहारा बनेंगे। यह पशुधन स्वस्थ बना रहे, इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 20 हजार से अधिक पशु चिकित्सकों की उपलब्धता भी तय की गई है ताकि गांव में ही त्वरित इलाज की सुविधा मिले। फिलहाल देश में पशु-चिकित्सकों की बहुत कमी है, इस कारण उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इस कमी को दूर करने के लिए डेढ़ लाख पशु देखभाल प्रशिक्षित सेवकों की अतिरिक्त तैनाती की जाएगी। इस उपाय से दुधारू पशुओं की असमय मृत्यु में कमी आएगी। यदि पालतू पशुओं को आरक्षित वनों में चरने की छूट दे दी जाती है तो सड़क दुर्घटनाओं में पशुओं के मरने में तो कमी आएगी ही,पौष्टिक चारा मिलने से दूध भी पौष्टिक होगा।

पशुधन की महिमा इस तथ्य से जानी जा सकती है कि खेती से होने वाली कुल आय में करीब 16 प्रतिशत की भागीदारी पशुपालन और उनसे उत्पादित आहार से है। इस आय में लगातार पिछले ग्यारह साल से 12.77 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि हो रही है। यानी खेती जहां लघु व मध्यम किसानों के लिए घाटे का सौदा बनी हुई है, वहीं पशुपालन ग्रामीणों को भरोसे की आय का साधन बन गया है।

भारत दूध उत्पादन में दुनिया में पहले सोपान पर है। विश्व के कुल दूध उत्पादन में भारत 25 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। बीते 10 साल में देश में दूध का उत्पादन लगभग 57 प्रतिशत बढ़ा है। नतीजतन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 2024-25 में 485 ग्राम प्रतिदिन हो गई है। भारत ने अमेरिका के लिए निर्मित वस्तुओं को बाजार नहीं खोले तो अनर्गल टैरिफ लगा दिए।

ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था अब केवल खेती पर निर्भर नहीं रही है। आम बजट में पशुधन, दुग्ध, मुर्गी और मत्स्य पालन को सशक्त करने के ठोस प्रावधान ग्रामीण आजीविका को नया आधार देते हैं। पशु-चिकित्सा सेवाओं के विस्तार और कुशल मानव संसाधन की तैनाती से आय में स्थिरता, रोजगार वृद्धि और खेती पर बढ़ते संकटों में कमी आने की उम्मीद है।

पशुधन का संरक्षण इसलिए जरुरी है, क्योंकि ग्रामों में दूध नियमित नकद आय का पुख्ता आधार बना हुआ है। ग्रामीण रोजगार और अर्थव्यवस्था में इसकी बड़ी भागीदारी है। देश में 2019 में हुई 20वीं पशुधन गणना के अनुसार करीब 14 करोड़ गाय और 11 करोड़ भैंसें हैं। याक,ऊंट,भेड़ और बकरी भी दुधारू पशुओं में गिने जाते हैं। हालांकि अभी तक हमारा राष्ट्रीय आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो महज 20 फीसदी पशुओं का ही आनुवंशिक वर्गीकरण कर पाया है। इससे पता चलता है कि हम अपने पशुधन के प्रति कितने लापरवाह हैं। जबकि घरेलू नस्ल के दुधारू जानवरों को स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों में पलने-बढ़ने व वंश वृद्धि में ज्यादा मजबूत और जुझारु पाया जाता है। ये पशु जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बर्दाश्त करने में भी ज्यादा समर्थ होते हैं। भारत दूध उत्पादन में दुनिया का अग्रणी देश है। फिर भी दूध की आपूर्ति सिंथेटिक दूध बनाकर और पानी मिलाकर की जा रही है। यूरिया से भी दूध बनाया जा रहा है। दूध की बढ़ती मांग के कारण दूध का कारोबार गांव-गांव तक फैल गया है।

जैविक तकनीक के क्षेत्र में भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार इस क्षेत्र में देश में पहली बार ई-3 (इकोनोमी एनवायरमेंट, एमप्लायमेंट) नीति कुछ समय पहले जारी की हुई है। इसके तहत दूध, खाद्यान्न, पर्यावरण सहित आम जनजीवन के सामने खड़ी होने वाली प्रत्येक चुनौती से निपटने की तैयारी है। इस क्षेत्र में फिलहाल जनता को सबसे बड़ा लाभ जैविक दूध के रूप में मिलने वाला है। पशुधन के बिना मिलने वाला यह जैविक दूध, दूध की कमी पूरा करने के साथ पौष्टिक भी होगा। अब तक बिना किसी सरकारी मदद के दूध का कारोबार फलता-फूलता रहा है। दूध का 70 फीसद कारोबार असंगठित ढांचा संभाल रहा है। इस व्यापार में लगे ज्यादातर लोग अशिक्षित हैं। लेकिन पारंपरिक ज्ञान से न केवल वे दुग्ध उत्पादन में दक्ष हैं, बल्कि दूध के सह-उत्पाद बनाने में भी कुशल हैं। दूध का 30 फीसदी कारोबार संगठित क्षेत्र, मसलन दूध डेयरियों के माध्यम से होता है। देश में दूध के उत्पादन से 96 हजार सहकारी संस्थाएं जुड़ी हैं। 14 राज्यों की भी अपनी दुग्ध सहकारी संस्थाएं हैं। देश में कुल कृषि खाद्य व दूध से जुड़ी प्रसंस्करण संस्थाएं केवल दो प्रतिशत हैं। बावजूद वे अशिक्षित किंतु पारंपरिक ज्ञान से कुशल ग्रामीण स्त्री-पुरुष ही हैं, जो दूध का देशी उपायों से प्रसंस्करण करके दही, घी, मक्खन, पनीर आदि बना रहे हैं। इस कारोबार की विलक्षण खूबी यह भी है कि इससे सात करोड़ से ज्यादा लोगों की आजीविका चलती है।

एक अनुमान क अनुसार भविष्य में जलवायु परिवर्तन और उच्च तापमान के चलते, सालाना दूध उत्पादन में 32 लाख टन की कमी आ सकती है। इस दूध का मूल्य 5,000 करोड़ रुपए के बराबर होगा। इसलिए जरुरी है कि दुधारू पशुओं की सभी प्रजातियों की नस्लों का संरक्षण व संवर्धन किया जाए। इस दृष्टि से 20 हजार पशु चिकित्सक, डेढ़ लाख दक्ष पशु सेवा प्रदाताओं के प्रबंध के साथ, 84 पशु चिकित्सा महाविद्यालय खोलने का प्रावधान इस बजट में किया गया है।

भारत में गिर, राठी, साहिवाल, देवनी, थारपारकर, लाल सिंध जैसे देशी नस्ल के दुधारू पशु उत्तर, मध्य, पूर्व और पश्चिम भारत में पाए जाते हैं। वाकई यदि इनके आनुवंशिक स्वरुप को उन्नत करने और इनके वंश की वृद्धि के कारगर प्रबंध किए जाते हैं तो देसी नस्ल की गायों से दुग्ध का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। हालांकि अब पहली बार आम बजट में पशुधन के संरक्षण को व्यापक महत्व दिया गया है,जो सराहनीय पहल है। यदि यह योजना प्रभावी ढंग से क्रियान्वित होती है तो आने वाले चंद सालों में पशुधन ग्रामीण भारत की रोजगार की पुख्ता गारंटी बन जायेगा। पशुधन जब तकदीर बनेगा तो ग्रामों से पलायन भी थम जाएगा। **(सप्रेस)**

जायद में लगायें मूंग

किस्में

गंगा – 8 (गंगोत्री) : मूंग की किस्म सन् 2001 में विमोचित हुई थी 74–78 दिन में पककर तैयार होने वाली यह किस्म 12–14 क्वि./ हेक्टर पैदावार देती है। इसका दाना छोटा (4.06 ग्राम /100 दाने) तथा चमकीला होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति काफी प्रतिरोधक पायी गई है।

पी.डी.एम. 139 : 2001 में विमोचन की गई मूंग की यह किस्म लगभग 62–65 दिन में पकती है। इसका दाना छोटा होता है तथा 10–12 क्वि. प्रति हेक्टर पैदावार देती है। यह किस्म भी पीतशिरा मोजेक के प्रति न्यूनतम प्रतिरोधी पायी गई है।

आई.पी.एम. 02–03 (2009) : खरीफ एवं जायद मौसम के लिए उपयुक्त मूँग की यह किस्म 62–68 दिन में पककर तैयार हो जाती है एवं इसकी औसत पैदावार 10–11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो जाती है। यह किस्म पीतशिरा विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी है।

आई.पी.एम. 02–14 (2010): जायद मौसम के लिए उपयुक्त मूँग की यह किस्म 60–65 दिनों में पककर 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की औसत पैदावार देती है। यह पीतशिरा विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी है तथा यह किस्म दक्षिणी राजस्थान हेतु विकसित की गई है।

के. 851 (1982) : 60 से 70 दिन में पककर यह किस्म 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज।

पी. डी. एम.–11 (1987): 60 से 65 दिन में पककर यह किस्म 10 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है।

पूसा विशाल (2001): यह किस्म लगभग 58–61 दिन में पक कर 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। इसका दाना मोटा होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

समर मूंग लुधियाना (एस.एम.एल.)–668 (2003) : 60–65 दिन में पकने वाली यह किस्म 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देती है तथा पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

जहाँ सिंचाई की पूर्ण सुविधा हो वहाँ पर वर्ष में तीसरी फसल के रूप में जायद मूंग की खेती की जा सकती है। इसकी खेती किसान को अतिरिक्त आय देने के साथ भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने में सहायक है।

बीज उपचार: मूंग में इमिडाक्लोप्रिड 5 ग्राम/किलो बीज दर के हिसाब से बीजोपचार कर बुवाई करें।

खेत की तैयारी: रबी की कटाई के तुरन्त बाद भूमि की आवश्यकतानुसार एक बार जुताई कर खेत को तैयार करें। अंतिम तैयारी के समय ध्यान रखें कि भूमि समतल हो जाए तथा जल निकास अच्छा हो।

भूमि उपचार: बुवाई से पहले प्रति किलो बीज को तीन ग्राम थायराम एवं बाविस्टीन से उपचारित करें। **राइजोबियम कल्चर से उपचार** : दलहनी फसलों के बीजों को राईजोबियम से उपचारित करने से अधिक पैदावार होती है। आवश्यकतानुसार गरम पानी में 250 ग्राम गुड़ मिलाकर घोल बनाएँ तथा ठंडा होने पर 600 ग्राम जीवाणु संवर्ध मिला दें। इस मिश्रण की एक हेक्टेयर में बोये जाने वाले बीजों पर भली–भाँति परत चढ़ा दें व छाया में सुखाकर बुवाई करें।

उर्वरक: जायद मूंग हेतु 20 किलो नत्रजन व 40 किलो फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। उर्वरक की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर दे दें।

बीज एवं बुवाई : जायद मूंग की अधिकतम पैदावार के लिए इसकी बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक का समय उपयुक्त रहता है। बुवाई हेतु 15–20 किलो बीज की प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। कतार से कतार की दूरी 25 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखें।

सिंचाई : फूल आने से पूर्व तथा फलियों में दाना बनते समय सिंचाई अत्यन्त आवश्यक है। तापमान एवं भूमि में नमी के अनुसार अतिरिक्त सिंचाई दें।

निराई–गुड़ाई: आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। 30 दिन की फसल होने तक निराई–गुड़ाई कर दें। बुवाई के पूर्व खरपतवारनाशी फ्लूक्लोरोलीन 0.75 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाने के बाद बुवाई करने से खरपतवार पर प्रभावी नियंत्रण रहता है जिससे अधिक पैदावार मिलती है।

फसल कटाई : फलियों के झड़कर गिरने से होने वाली हानि को रोकने के लिये फसल पकने के बाद किन्तु दाने झड़ने से पहले कटाई कर लें। इसके बाद एक सप्ताह तक सुखा कर गहाई करके दाना निकाल लें।

मूंग की अनुशंसित किस्में

केएम 2195 स्वाती, आईपीयू 1026, आईपीयू 11–02, आईपीयू 13–01, गंगा–8, टीजेएम–3, पीकेवीएकेएम–4, आईपीएम 205–7 (विराट), आईपीएम 410–3 (शिखा), टीजेएम–37, पीडीएम–139, हम–16, हम–12, पूसा 0531, जेएम 721, पूसा विशाल, एसएमएल 668, सुकेती।

जायद में लगायें मक्का

भूमि का चुनाव – मक्के की खेती ऐसी भूमि में की जानी चाहिए जिसका पी.एच.मान 6.0 से 7.0 तक हो। जल भराव मक्के की फसल के लिए बहुत हानिकारक होता है। सामान्यत: मक्का की खेती सभी प्रकार की मृदाओं, बालुई मिट्टी से भारी चिकनी मिट्टी तक में सफलतापूर्वक की जा सकती है।

समय पर बुवाई – खरीफ के लिए बुवाई जून के द्वितीय पखवाड़ा से लेकर जुलाई के प्रथम पखवाड़ा तक व वर्षा आधारित द्विफसली खेती के लिए जून में खरीफ व नवम्बर माह में रबी फसल की बुवाई करें। जायद फसल लेने के लिए बुआई का समय जनवरी से मार्च तक का है।

भूमि की तैयारी– खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने के बाद दो से तीन बार कल्टीवेटर से आड़ी–खड़ी जुताई करके जमीन को भुरभुरी एवं महीन बना लेते हैं। पाटा चलाकर खेत को समतल बना लेना चाहिए। इससे अच्छा अंकुरण होता है। बुआई के 20 दिन पूर्व 20–25 गाड़ी गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मिला दिया जाता है।

दाने वाली किस्म	उर्वरक किलोग्राम प्रति हेक्टेयर		
	नाईट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
शीघ्र पकने वाली	80	50	30
मध्यम पकने वाली	100	60	40
देरी से पकने वाली	120	60	40

उन्नतशील किस्में – जेएम 215, 218, सीएमएच–08–433, नर्मदा मोती (आईसी 9001), जवाहर मक्का 216, आजाद कमल (9803), प्रताप मक्का–5, जवाहर पॉपकार्न 11, जेवीएम 421, चंद्रमणि (आर–2005–2), एचक्यूपीएम–1, 4, 5, पीएमएच 5, को–6, एनएमएच 803, 731, केएमएच 3426, पूसा कम्पोजि–1, 2, जेएम–8, 12।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार– साधारण तया संकर जातियों का 15–20 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर एवं चारे की फसल के लिये 40–50 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है। जायद में भुट्टे के लिए खेती करने पर 20 से 25 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बीज बोने से पहले थायरम या बाविस्टीन नामक फफूंद नाशक दवा की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीज की बुआई 3–5 सेन्टी मीटर गहराई पर की जानी चाहिए। बोआई कतार विधि से करने पर अधिक लाभ प्राप्त होता है।

पौध अन्तरण – मौसम के आधार पर अंतराल रखने से उत्पादन अच्छा प्राप्त होता है। जायद मौसम की फसल में कतार से कतार के बीच की दूरी 45–60 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 25 सेंटीमीटर होना चाहिए। सामान्यत: खेत में 25–30 हजार पौधे प्रति एकड़ होने पर वांछित उत्पादन प्राप्त होता है।

उर्वरक व खाद प्रबंधन – मक्के की अनुमानित उपज पाने के लिए 2 वर्ष में एक बार 8–10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट का प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुवाई के समय खेत में मिला देना चाहिए। नत्रजन की मात्रा को तीन भागों में बांटकर प्रयोग करने से उर्वरक की पूरी मात्रा पौधों को प्राप्त होती है। नत्रजल की एक तिहाई मात्रा बुवाई के समय दूसरी तिहाई मात्रा मक्के की घुटने तक ऊंचाई होने पर व अंतिम मात्रा नरमंजरी अवस्था में देना चाहिए। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर की दर से जिंक सल्फेट का प्रयोग हर तीसरे वर्ष बुवाई के समय आधार उर्वरक के रूप में करना चाहिए।

मक्का एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है। विश्व एवं भारत में मक्का एक महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। इसका उपयोग पशु चारे के रूप में भी किया जाता है। इसके उत्पादन का 26 प्रतिशत मनुष्य आहार, 11 प्रतिशत जानवरों के आहार, 48 प्रतिशत मुर्गी के आहार, 12 प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन एवं शेष स्टार्च एवं बीज के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इसके अलावा मक्का का प्रयोग कार्न फ्लेक्स, तेल निकालने में, स्टार्च के लिये, पाप कार्न, शराब बनाने आदि के रूप में भी किया जाता है। विश्व के खाद्यान्न उत्पादन में इसका 25 प्रतिशत योगदान है। धान्य फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से मक्का का स्थान तीसरा है।

जल प्रबंधन – फसल के लिए पानी की अधिकता एवं कमी दोनों ही हानिकारक है। खरीफमें सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ग्रीष्म कालीन फसल में 10–15 दिन के अंतरात में सिंचाई करते रहना आवश्यक होता है। पूरी फसल अवधि में 8–10 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिसमें तीन सिंचाई फूल आने के पहले व तीन फूल आने के बाद की जाती है।

भिण्डी लगाकर पाएं अधिक लाभ

भिण्डी सब्जी फसल 75 से 80 दिन में तैयार होकर की पैदावार दे देती है। भिण्डी की सब्जी पौष्टिक, लौह तत्व से परिपूर्ण, कब्ज विनाशक एवं विटामिन युक्त होती है। घरेलू खपत के अलावा कुल सब्जियों के निर्यात में भिण्डी का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है।

भिण्डी को गर्मी तथा वर्षा ऋतु में सफलतापूर्वक उगाकर अच्छा लाभ ले सकते हैं। इस समय खाली खेतों में भिण्डी की फसल उगाकर बाजार में अच्छा भाव मिलने से मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। भिण्डी की उन्नत किस्मों को उगाकर प्रति एकड़ 50 से 60 क्विंटल उपज ली जा सकती है।

बिजाई का समय: गर्मी की फसल की बिजाई फरवरी–मार्च तथा वर्षा ऋतु में जून जुलाई में की जानी चाहिए। बसंतकालीन उगाई गई भिण्डी की बाजार में ज्यादा मांग रहती है।

खेत की तैयारी: बिजाई से पहले खेत में गोबर खाद डालकर जुताई व पाटा लगाकर अच्छी प्रकार तैयार कर लें। इस समय भिण्डी की बिजाई डोलियों में भी कर सकते हैं।

उन्नत किस्में: व्ही.आर.ओ.–6,पद्मनी, संकर किस्में विजय, विशाल हाइब्रिड–7, विशाल हाइब्रिड–8, अर्का, अनामिका, पूसा मखमली भिण्डी की हिसार उन्नत, पी–7, वर्षा, उपहार तथा पूसा सावनी रोगरोधी एवं ज्यादा उपज देने वाली किस्में हैं। हिसार उन्नत तथा वर्षा उपहार किस्में बोने के 45 दिन बाद फल देना शुरू कर देती है।

बीज मात्रा : बीज दर 15–20 किलो प्रति हेक्टेयर सामान्य, संकर किस्म 6 किलो प्रति हेक्टेयर

बसंतकालीन भिण्डी के लिए 12 से 15 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ बोना चाहिए। बोने से पहले बीज को रातभर पानी में भिगोएं। बिजाई 30 सेंटीमीटर चौड़ी डोलियों में दोनों तरफ किनारों पर 10 सेमी की दूरी पर तथा वर्षा ऋतु में लाइन का फासला 45 से 60 तथा पौधे से पौधा 30 सेमी रखें।

संतुलित खाद एवं उर्वरक : बोते समय एक कट्टा डीएपी तथा 20 किग्रा यूरिया प्रति एकड़ तथा 25 किग्रा यूरिया बोने के तीन सप्ताह बाद तथा 25 किग्रा. फल आने के समय दें।

- गोबर खाद 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर बुवाई
- नत्रजन 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 30 दिनों बाद
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 45 दिनों बाद
- स्फुर 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय

खरपतवार नियंत्रण : आवश्यकतानुसार निंदाई खरपतवार नियंत्रण 40 दिनों तक करें। एक सप्ताह के अंतराल पर 3 से 4 गुड़ाई पर्याप्त है। 20 से 35 दिन बाद निराई गुड़ाई करें। बिजाई से एक दिन पहले फलूक्लोरोलिन की 400 ग्राम मात्रा 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें तथा 3 से 4 सेमी. गहरी रेक कर देने से भी खरपतवार नियंत्रण हो जाता है।

सिंचाई : साप्ताहिक सिंचाई अनुशंसित है।

तुड़ाई : 45 से 50 दिनों बाद शुरू प्रति 2–3 दिनों के अंतराल में।

उपज : लगभग 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

अन्य उपयोग : गुड़ बनाते समय गुड़ साफ करने के लिए।

सावधानियां : कीटग्रसित फल तोड़कर भिण्डी में दवा दें तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की सलाह से करना चाहिए।

कीटनाशक दवा छिड़काव से पहले फल तोड़ लें तथा छिड़काव के बाद भी जब भिण्डी तोड़े उन्हें अच्छी प्रकार से पानी से धोकर ही खाएं या मंडी ले जाएं एवं फल तुड़ाई के समय मानव स्वास्थ्य हित मेलाथियान या डाईक्लोरमास जैसी सुरक्षित दवाओं का उपयोग करें।

कीट नियंत्रण : रस चूसक कीट जैसे हरा मच्छर, सफेद मक्खी, मोला, फुदका नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। लाल मकड़ी नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी या डायकोफाल 5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से, फल छेदक इल्ली नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।

जायद का हीरा खीरा

मिट्टी – लगभग सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है। परन्तु इसकी सफलतापूर्वक खेती के लिये बलुई दोमट तथा मटासी मृदा उत्तम मानी जाती है।

उन्नत किस्में – पूसा संयोग, पाइनसेट, खीरा–90, टेस्टी, मालव–243, गरिमा सुपर, ग्रीन लॉग, सदोना, एन.सी.एच.–2, रागिनी, संगिनी, मंदाकिनी, मनाली, य.एस.–6125, यू.एस.–6125, यू.एस.–249।

बुवाई का समय व बीज दर – बुवाई का समय स्थान विशेष की जलवायु पर निर्भर करता है। वैसे गर्मी वाली फसल के लिये बीज की बुवाई फरवरी के मध्य से मार्च के पहले सप्ताह तक में करें। एक हेक्टेयर खेत के लिये 2.5 से 3.0 किग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बीज को उपचारित करने के लिये बीज को चौड़े मुंह वाले मटका में लेकर 2.5 ग्राम थाइरम दवा प्रति किलोग्राम बीज के दर से मिलाते हैं। दवा को बीज में अच्छी प्रकार मिलाने के लिये मटका में दवा व बीज को डालकर दोनों हाथों से कई बार ऊपर–नीचे करें जिससे दवा का आवरण बीज के चारों ओर लग जाये।

बोने की विधि – बुवाई के लिये अच्छी तरह से तैयार खेत में थाले तैयार कर लेते हैं इस थाला के चारों तरफ 2–4 बीज 2–3 सेन्टी मीटर गहराई पर बोयें। खीरे की बुवाई नाली में भी किया जाता है। इस फसल की बुवाई करने के लिये 60 सेन्टीमीटर चौड़ी नालियों का निर्माण करते हैं, जिनके किनारे पर खीरे के बीज की बुवाई की जाती है। दो नालियों के बीच की दूरी 2.5 मीटर रखें। इसके साथ ही एक बेल से दूसरे बेल के नीचे 60 सेन्टीमीटर का फासला भी रखें। ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिये बीज की बुवाई करने से पूर्व 12–18 घण्टे तक पानी में भिगोकर रखें, इससे बीज का अंकुरण अच्छा होता है। बीज की बुवाई के लिये कतार से कतार की दूरी 1.0 मीटर व पौध से पौध की दूरी 50 सेन्टीमीटर रखें। खीरे के पौधे से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये इस फसल को सहारा देना आवश्यक है।

खीरा गर्मी की एक महत्वपूर्ण फसल है, जिसकी खेती गर्मी के अलावा बरसात के मौसम में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। आमतौर पर सलाद के रूप में उपयोग किये जाने वाले खीरे में इरेप्सिन नामक एन्जाइम पाया जाता है, जो प्रोटीन को पचाने में सहायक होता है। इसके अलावा खीरा पानी का अच्छा स्रोत है जिसमें लगभग 96 प्रतिशत पानी पाया जाता है। इसलिये खीरा गर्मी में तरावट देने वाली एक मुख्य सब्जी है। खीरा विटामिन ए, बी–1, बी–6, विटामिन–सी, विटामिन–डी के अलावा पोटेशियम, फास्फोरस व लोहा आदि का एक उत्तम स्रोत है। खीरे के जूस का नियमित सेवन करने से हमारा शरीर बाहर व अन्दर से मजबूत बनता है।

खाद व उर्वरक प्रबंधन – खीरे की एक हेक्टेयर खेत में खेती करने के लिये 30 टन गोबर खाद का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त प्रति हेक्टेयर 100 किलोग्राम यूरिया, 125 किग्रा. एन.पी.के., 30 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश का उपयोग करें। फसल में फल लगने प्रारंभ हो जाये तो फसल पर एक या दो तुड़ाई के बाद एक प्रतिशत यूरिया के घोल का पौधों पर छिड़काव करने से पौधों की बढ़वार व फलत अधिक व लम्बे समय तक प्राप्त होती है। खीरे के पौधे से अधिक फल प्राप्त करने के लिये वृद्धि नियामक हार्मोन के प्रयोग से मादा फूलों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। जिसके लिये इथरेल 250 पी.पी.एम सान्द्रता वाले मिश्रण का घोल बनाकर, जब पौधों में दो पत्तियां वाले पौधे हो जाये तब छिड़काना चाहिये, जिससे खीरे के पौधों में मादा पुष्पों की संख्या में वृद्धि हो जाती है। तथा अधिक फल लगने के कारण उपज बढ़ जाती है। 250 पी.पी.एम. का घोल बनाने के लिये आधा मिली. इथरेल/लीटर पानी में घोलना चाहिये।

सिंचाई – फसल में फूल आने की अवस्था में हर पांच दिन के अन्तर पर सिंचाई करें। जिन क्षेत्रों में सिंचाई जल की कमी हो वहां पर टपक सिंचाई लगायें।

इससे खेत में पर्याप्त नमी बनी रहती है, ह्यसाथ ही सिंचाई जल की आवश्यकता भी कम होती है।

कटाई व उपज – खीरे की फसल की अवधि 45 से 75 दिनों की होती है। जिससे लगभग 100 से 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है। खीरे की बेमौसम फसल पाली हाउस में उगाकर अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

अण्डा उत्पादन को कम करने वाले पोषण से जुड़े रोग

● अंचल केशरी ● रविंद्र कुमार जैन
● अशोक कुमार पाटिल ● नरेश कुरेचिया
anchalkeshri05@gmail.com

रिकेट्स

कैल्शियम, विटामिन डी 3 या फास्फोरस परिसंचरण की कमी या असंतुलन के कारण होता है। यह रोग तब होता है। जब इन पोषक तत्वों का असंतुलन या आहार कम हो जाता है। कुछ दवाएं और कवक विषाक्त पदार्थ भी रिकेट्स का कारण बन सकते हैं। इस रोग के परिणाम से हड्डियाँ सिकुड़ जाती है, जो अक्सर झुका हुआ होता है, जिससे पक्षियों की खड़े होने और चलने की क्षमता को सीमित करता है। अगर स्थिति जल्दी पकड़ी जाती है तो रिकेट्स का रोकथाम या इलाज किया जा सकता है। सामान्य हड्डी कैलिफिकेशन होने के लिए, कैल्शियम और फास्फोरस पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति की जानी चाहिए और उन्हें एक-दूसरे के लिए सही अनुपात में आपूर्ति करने की भी आवश्यकता है (2:1)। विटामिन डी 3 महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कैल्शियम के अवशोषण को नियंत्रित करता है। माइकोटॉक्सिन मोल्ड या कवक द्वारा उत्पादित विषाक्त पदार्थ होते हैं और यह मुर्गियों पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं जिनमें पोषक तत्वों के अवशोषण के साथ हस्तक्षेप भी शामिल है। माइकोटॉक्सिन प्रेरित विकेटों का विषाक्त पदार्थ दूषित फीड को प्रतिस्थापित करके और सामान्य स्तर से तीन गुना विटामिन डी 3 देकर इलाज किया जा सकता है।

पिंजरा लेयर थकान

पिंजरा लेयर थकान को पोषण बीमारी के रूप में वर्णित किया जाता है और पिंजरों में रखी मुर्गियों की मृत्यु का एक प्रमुख कारण होता है। यह स्थिति आमतौर पर अधिकतम अंडे उत्पादन करने वाली मुर्गियों में होती है और यह ऑस्टियोपोरोसिस से भी जुड़ी हो सकती है, पिंजरा लेयर थकान एक ऐसी स्थिति है जो भंगुर हड्डियों का कारण बनती है। पिंजरा लेयर थकान का प्राथमिक कारण तन में कैल्शियम की कमी को माना जाता है, आमतौर पर उच्च उत्पादन के दौरान कैल्शियम के असंतुलित अवशोषण के परिणामस्वरूप हो सकती है जो उत्पादन चरण के दौरान कैल्शियम अवशोषण या हड्डी कैलिफिकेशन को कम करती है। पिंजरा लेयर थकान से पीड़ित मुर्गियां अपने पैरों पर नियंत्रण खो देती हैं। आमतौर पर अंडा उत्पादन में कोई नुकसान नहीं होता है और न ही अंडे की परत की गुणवत्ता या अंडे की अंदर की गुणवत्ता में कोई कमी होती है। चूंकि फर्श में रखने वाली मुर्गियों की तुलना में पिंजरा की परतों में स्थिति अधिक प्रचलित है, इसलिए इस स्थिति को रोकने में व्यायाम अच्छी भूमिका निभाता है। अगर मुर्गियों को पिंजरों से हटा दिया जाये और फर्श पर सामान्य रूप से चलने दिया जाये तो मुर्गियां ठीक हो जाती हैं। पिंजरा लेयर थकान कई मुर्गियों के बजाय अकेली मुर्गी के पिंजरों में अधिक होता है क्योंकि दाना और पानी के लिए प्रतिस्पर्धा करते समय पिंजरे में मुर्गियों का व्यायाम होता है। मुर्गियों को समय-समय पर कैल्शियम को सही अनुपात में खिलाने से मज्जा की हड्डियों में कैल्शियम की कमी नहीं होती है।

मुर्गियो के झुण्ड में तेजी से फैलने वाली विभिन्न रोगजनक एवं संक्रामक बीमारियां है। लेकिन कुछ पोषक तत्व और चयापचय संबंधी विकार भी हैं, यदि उनकी पहचान और उनके लक्षणों का इलाज नहीं किया जाता है। तो वे तुरंत झुंड के माध्यम से फैल जाएंगे।

फैटी यकृत सिंड्रोम

मुर्गियों में उच्च उत्पादन अवधि के दौरान होने वाले सबसे महत्वपूर्ण चयापचय विकारों में से एक है। जिगर में अत्यधिक वसा से संबंधित रोग, झुंड में मृत्यु दर में वृद्धि, बीमारी का पहला संकेत है। कई कारक यकृत की कोशिकाओं में वसा की वृद्धि करते हैं जिसमें उच्च अंडे के उत्पादन, विषाक्त पदार्थ, पोषक असंतुलन, उच्च ऊर्जा आहार की अत्यधिक खपत, यकृत (लिपोट्रॉपिक एजेंट), अंत:स्रावी असंतुलन और आनुवांशिक घटकों से वसा को सक्रिय करने वाले पोषक तत्वों की कमी शामिल है। मुर्गियों में फैटी यकृत सिंड्रोम वसा की अत्यधिक संचय का परिणाम होता है जब लिपोप्रोटीन परिवहन बाधित हो जाता है। उस समय यकृत एवियन प्रजातियों में लिपिड संश्लेषण का मुख्य स्थल है। जो अंडे पैदा करने वाली मुर्गियों में बहुत सक्रिय है। फैटी यकृत सिंड्रोम मृत मुर्गियों की नेक्रोपसी से पता चलता है प्रभावित मुर्गियों के कॉम्ब्स भी पीले होते हैं। इसमें यकृत कोशिकाएं वसा वैक्यूल्स से से भरी होती हैं। पक्षियों के पेट की गुहा में बड़ी मात्रा में वसा पाया जाता है। फैटी यकृत सिंड्रोम तब होता है जब मुर्गिया सकारात्मक ऊर्जा संतुलन में होती हैं फैटी यकृत सिंड्रोम को रोकने के लिए आहार में संशोधन का उपयोग किया जाता है। पूरक वसा के साथ कार्बोहाइड्रेट को प्रतिस्थापित करने से आहार की ऊर्जा की वृद्धि नहीं होती है और यह फायदेमंद होता है। गेहूं और जौ जैसे अन्य अनाज के साथ मकई को बदलना अक्सर फायदेमंद होता है। मछली के भोजन, जई के हल और भोजन जैसे उत्पाद खिलाने से भी फैटी यकृत सिंड्रोम कम होता है। फैटी यकृत सिंड्रोम को रोकने का सबसे अच्छा तरीका पुरानी मुर्गियों में अत्यधिक सकारात्मक ऊर्जा संतुलन को रोकना है। संभावित समस्याओं को देखते हुए मुर्गियों के शारीरिक वजन पर नजर रखी जाती है। जब शरीर के वजन में वृद्धि देखी जाती है, तो आहार में बदलाव करके ऊर्जा के सेवन को प्रतिबंधित किया जाता है।

निष्कर्ष

रिकेट्स पिंजरा लेयर थकान और फैटी यकृत सिंड्रोम आहार सम्बंधित बीमारियां हैं जो मुर्गियां के उत्पादन को प्रभावित करती हैं और मुर्गियों के झुंड की मृत्यु दर के उच्च प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हैं। उत्पादन वाले मुर्गियों का आहार विशेष रूप से पूरा होना चाहिए, हालांकि, इन बीमारियों की घटनाएं विशेष रूप से उच्च उत्पादन के समय मुर्गियों में होती हैं वर्तमान में, पिंजरे प्रणालियों में वाणिज्यिक रूप से रखे हुए मुर्गियों कोऑस्टियोपोरोसिस जैसी बीमारियों से बचाने के लिए बहुत कुछ किया जाता है। इस बीमारी को एक उत्पादन बीमारी माना जा सकता है एवं आहार में सुधार करके इनको कम किया जा सकता है। गेहूं का चोकर जैसे कम ऊर्जा फीडस्टफ के साथ कुछ मकई देकर फैटी यकृत सिंड्रोम का इलाज किया जा सकता है।

साहीवाल गाय और उसकी खासियत

साहीवाल नस्ल की गाय पाकिस्तान में साहिवाल जिले से उत्पन्न मानी जाती है। आज साहीवाल भारत और पाकिस्तान में सबसे अच्छा डेयरी नस्लों में से एक है।

शारीरिक विशेषताएं:

गहरा शरीर, ढीली चमड़ी, छोटा सिर व छोटे सींग इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं इसका शरीर साधारणत: लंबा और मांसल होता है। इनकी टांगें छोटी होती हैं, स्वभाव कुछ आलसी और इसकी खाल चिकनी होती है। पूंछ पतली और छोटी होती है।

यह गाय लाल और गहरे भूरा रंग की होती है कभी-कभी इसके शरीर पर सफेद चमकदार धब्बे भी होते हैं। ढीली चमड़ी होने के कारण इसे लोग लोला भी कहते हैं।

नर साहिवाल के पीठ पर बड़ा कूबड़ होता है व इसकी ऊंचाई 136 सेमी और मादा की ऊंचाई 120 सेमी के आसपास होती है।

नर गाय का वजन 450 से 500 किलो और मादा गाय का वजन 300-400 किलो तक होता है।

साहीवाल गाय का दूध उत्पादन:

यह गाय 10 से 16 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है। अपने एक दुग्धकाल के दौरान ये गायें औसतन 2270 लीटर दूध देती हैं। साथ ही इसके दूध में पर्याप्त वसा होता है। ये विदेशी गायों की तुलना में दूध कम देती हैं, लेकिन इन पर खर्च भी काफी कम होता है। साहीवाल की खूबियों और उसके दूध की गुणवत्ता के चलते वैज्ञानिक इसे सबसे अच्छी देसी दुग्ध उत्पादक गाय मानते हैं। इनकी कम होती संख्या से चिंतित वैज्ञानिक ब्रीडिंग के जरिये देसी गायों की नस्ल सुधार कर उन्हें साहीवाल में बदलने पर जोर दे रहे हैं, जिसके तहत देसी गाय की पांचवीं पीढ़ी पूर्णत: साहीवाल में बदलने में कामयाबी हासिल हुई है।

साहीवाल गाय की अन्य विशेषता:

इसका शरीर गर्मी, परजीवी और किलनी प्रतिरोधी होता है जिससे इसे पालने में अधिकम मशक्कत नहीं करनी पड़ती है और डेरी किसानों को पालने में बहुत फायदा होता है।

इस गाय की अन्य विशेषताएं हैं:-

- उच्च दूध की पैदावार
- प्रजनन की आसानी ● सूखा प्रतिरोधी
- अच्छा स्वभाव अच्छी देखभाल करने पर ये कहीं भी रह सकती हैं।

गर्मी सहने की अच्छी क्षमता और उच्च दुग्ध उत्पादन के कारण इन गायों को एशिया, अफ्रीका और कई कैरेबियाई देशों में भी निर्यात किया गया है।

- मुख्यत: पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, बिहार व मध्यप्रदेश में पाया जाता है।
- दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में 1350 किलोग्राम
- व्यावसायिक फार्म की स्थिति में - 2100 किलोग्राम
- प्रथम प्रजनन की उम्र 32-36 महीने
- प्रजनन की अवधि में अंतराल -15 महीने।

कहां मिलेगी : करनाल, अबोहर, हिसार के क्षेत्र में।

समस्या -समाधान

समस्या– सरसों फसल में पौध संरक्षण के हिसाब से वर्तमान में क्या कार्य करें विस्तार से बतायें।

– मनमोहन मौर्य

समाधान– सरसों की फसल वर्तमान में फूल–फली की अवस्था में चल रही है इस मौके पर कीट/रोग के आक्रमण पर निरीक्षण और उपाय तत्परता से किया जाना जरूरी होगा। आप निम्न बातों पर ध्यान दें।

- निचली पत्तियों पर यदि लाल रंग के किनारे दिख रहे हों तो इसे जिंक की कमी मानकर एक छिड़काव 1 किलो जिंक के साथ 5 किलो यूरिया 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- पत्तियों में यदि सफेद फफोले दिखाई दे रहे हों तो 600 ग्राम डाईथेन एम 45 250–300 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- इस छिड़काव से पत्तियों पर आने वाले अन्य रोगों को भी रोका जा सकता है।
- माहो की रोकथाम बहुत ही जरूरी है इसके लिये 250 से 400 मि.ली. मेटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. इतने ही लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़कें।

समस्या– चने की इल्ली का प्रकोप आने लगा है, कौन सी दवा डालें कृपया बतायें।

समाधान– चने की इल्ली से निपटने के लिये एकीकृत–नाशीजीव प्रबंधन (आई.पी.एम.) को बनाया गया जो निम्नानुसार है। जिसे हर कृषक यदि अंगीकृत कर ले तो चने की इल्ली कोई समस्या नहीं रह पायेगी।

- गहरी जुताई तथा मेढ़ों की सफाई।
- चने की बुआई अक्टूबर 15 तक करें।
- मिश्रित फसल लगायें, जौ तथा सरसों की एक कतार साथ दो कतार चने की लगायें।
- अफ्रीकन गेंदा को चने के फसल में कतारों के बीच तथा आसपास लगायें।
- खेत में एक हेक्टर में 20–25 टी आकार की खूटियां भी लगायें।
- फेरोमेन ट्रेप का उपयोग करें।
- घेटी अवस्था पर 2–3 इल्ली 1 मीटर कतार में आने पर 50 मि.ली. फेनवलरेट 20 ई.सी. या 50 मि.ली. साइपरमेथिन 25 ई.सी. को 100 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- इसके अलावा प्रोफेनोफास 50 ई.सी. 2 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।

समस्या– मैं अपने बगीचे में बेर के पौधे लगाना चाहता हूं, अच्छी पौध कहां मिलेगी, अन्य जानकारी भी दें।

– अभय वर्मा

समाधान – बेर एक सहिष्णु पौधा है कम पानी, खराब भूमि में भी पनप जाता है बेर में अनेक प्रकार के पौष्टिक पदार्थ पाय जाते हैं आमतौर पर सभी इसका उपयोग करते हैं आप निम्न तकनीकी अपनायें।

- साधारण भूमि का चुनाव भी इसके लिये किया जा सकता है।

- पौधों की रोपाई पौध से पौध 10 मीटर दूरी पर की जाती है। 60×60×60 से.मी. के गड्ढे तैयार कर गोबर खाद डालें। संपर्क करें–
- उप संचालक, उद्यानिकी विभाग, बुरहानपुर

समस्या– गेहूं में सूक्ष्म तत्व जस्ते की कमी के क्या लक्षण होते हैं कैसे उपचार किया जाये।

– सुभाष यादव

समाधान– गेहूं तथा धान पर जिंक की कमी के लक्षण समान रूप से देखे जा सकते हैं।

- फसल में जिंक की कमी के लक्षण पहली सिंचाई के उपरांत कल्ले निकलते वक्त देखे जा सकते हैं।
- ऊपर से तीसरी पत्तियों पर सफेद/तांबिया रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।
- प्रभावित पत्तियां बीच से सिकुड़ जाती हैं। पौधों का विकास अवरोधित हो जाता है। लगातार तापमान कम रहने की स्थिति में प्रकोप बढ़ जाता है। उपचार के लिये निम्न उपाय करें।
- 15–25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टर की दर से डालें। एक साल का उपचार का असर दो वर्ष रहता है।
- खड़ी फसल में छिड़काव के लिये एक हेक्टर क्षेत्र के लिये 5 किलो जिंक सल्फेट और 2–5 किलो बुझा हुआ चूना 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- जिंक सल्फेट और चूना अलग–अलग कम पानी में घोले छानकर हजार लीटर पानी में मिलायें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

प्राकृतिक खेती – अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

रिसोर्स और सपोर्ट

क्रॉप विविधता क्या है?

क्रॉप डाइवर्सिफ़िकेशन या फसल विविधता किसी दिए गए खेती वाले इलाके में, फसल चक्र और/या संगठित होकर एक से ज्यादा किस्में उगाने का तरीका है।

मिट्टी में न्यूनतम गड़बड़ी का क्या मतलब है?

प्राकृतिक खेती में मिट्टी तैयार करते समय अपनाई जाने वाली क्रियाएं जो मिट्टी में गड़बड़ी को कम करती हैं।

मिट्टी में कम से कम गड़बड़ी कैसे की जा सकती है?

इसे इन तरीकों से किया जा सकता है

– कम जुताई के तरीके (जैसे जुताई, हैरो चलाना, और सभी जुताई के काम जो आमतौर पर बीज के अंकुरण के लिए मिट्टी तैयार करने के लिए किए जाते हैं।

– सीधे बीज बोना।

– प्राकृतिक खाद का सीधा इस्तेमाल।

व्हाप्सा क्या है?

यह वह स्थिति है जहाँ दो मिट्टी के कणों के बीच की जगह में हवा और पानी के अणु दोनों मौजूद होते हैं। यह मिट्टी की सूक्ष्म जलवायु है जिस पर मिट्टी के जीव और जड़ें अपनी ज्यादातर नमी और कुछ पोषक तत्वों के लिए निर्भर करती हैं।

मल्चिंग या पलवार क्या है?

मल्चिंग या पलवार का मतलब है मिट्टी की सतह को जिंदा फसलों और पुआल (मरे हुए पौधों का बायोमास) दोनों का इस्तेमाल करके ढंकना।

पलवार कितने तरह की होती है?

पलवार दो तरह की होती है–

फसल के बचे हुए हिस्से की पलवार : कटाई के बाद बची हुई फसल की चीज़ें जैसे सूखे पत्ते, पुआल, छोटी टहनियाँ वगैरह मिट्टी को ढंकने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं।

जीवित पलवार : लाइव पलवार में मुख्य फसल की लाइनों में कम समय वाली फसलों के बहु फसली/अंतरवर्तीय बनाए जाते हैं। उदाहरण – गेहूं/ चावल (पोटाश, फॉस्फेट और सल्फर जैसे पोषण देते हैं) को दालों (नाइट्रोजन-स्थापन पौधे) के साथ लगाना।

बहुफसली खेती क्या है?

मल्टी-क्रॉपिंग का मतलब है एक ही ज़मीन पर एक साथ दो या दो से ज़्यादा फसलें उगाना।

खेती में केंचुआ क्या भूमिका निभाता है?

केंचुए जैव अपघटन वाली चीज़ों को खाते हैं और उन्हें अच्छी खाद में बदल देते हैं। केंचुए मिट्टी को जोतते हैं और मिलाते हैं। उनकी सुरंग बनाने की प्रक्रिया मिट्टी को ढीला करती है ताकि पानी और न्यूट्रिएंट्स नीचे जा सकें।

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

स्वास्थ्य/शिक्षण

'पालक' बच्चों की सेहत के लिए फायदेमंद

शायद आपके बच्चों को भी पपई द सेलर मैन जैसे कॉर्टून से पालक खाने की प्रेरणा मिली हो। पालक को खाते ही उसमें गजब की शक्ति आ जाती है। अगर आदत नहीं तो आज ही अपने बच्चे को पालक खाने की आदत डालें। जी हां पालक को आयरन का पावरहाउस कहा जाता है। लेकिन क्या आप जानते है कि पालक में कैलोरी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, फाइबर और मिनरल तत्व होता हैं। साथ ही पालक में विभिन्न मिनरल तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन तथा विटामिन ए, बी, सी आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाते हैं। इसलिए इसमें मौजूद यह सभी तत्व बढ़ते बच्चों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। आइए जानें पालक बच्चों की सेहत को किस तरह फायदेमंद होता है।

हड्डियां और मसल्स बनती हैं मजबूत

कैल्शियम, मैग्नेशियम और फोस्फोरस से भरपूर पालक हड्डियों के लिए फायदेमंद है। यह हड्डियों को स्वस्थ बनाने के साथ मजबूत बनाता है। इसके अलावा पालक विटामिन के का एक बहुत अच्छा स्त्रोत है, जो हड्डियों में कैल्शियम को बनाए रखने में मदद करता है। आयरन के साथ–साथ इसमें प्रोटीन के साथ एमिनो एसिड भी पाया जाता है। जो किसी भी हाई प्रोटीन फूड से बेहतर होता है।

इम्यूनिटी को बेहतर बनाए

मल्टीविटामिन पालक में सभी तरह के खास विटामिन पाए जाते है। जिससे बच्चे का इम्यून सिस्टम मजबूत रहता है। इतना ही नहीं, पालक विटामिन के का सबसे अच्छा स्त्रोत है। और इसमें पाया जाने वाला बीटा कैरोटिन के कारण इसके सेवन से बच्चों का पाचनतंत्र मजबूत होता है और यह भूख बढ़ाने में सहायक होता है। अगर आपका बच्चा खाना खाने में अनाकानी करता है तो उसे आज से ही पालक खाने को दें।

आंखों के लिए अच्छा

अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे की आंखों पर चश्मा न लगें तो उसके आहार में पालक को शामिल करें। पालक बच्चों की आंखों के लिए बेहद अच्छा होता है इसमें विटामिन ए और ल्यूटिन जैसे पोषक तत्व मौजूद होते है। विटामिन ए कॉर्निया की रक्षा करने में मदद करता है और ल्यूटिन पराबैंगनी प्रकाश से आंखों की रक्षा करता है।

डिहाइड्रेशन से बचाए

छोटे बच्चों में पानी की कमी बड़े बच्चों की तुलना में ज्यादा पाई जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि वे बड़े की तुलना में ज्यादा जल्दी तरल पदार्थ खोते हैं। और पालक में पानी की मात्रा लगभग 90 प्रतिशत होती है और यह प्राकृतिक तरल पदार्थ से भरा होता है। इसी वजह से यह बच्चों को डिहाइड्रेशन से बचाता हैं।

मस्से से पायें छुटकारा

मस्से विषाणु संक्रमण से पैदा होते हैं। प्रायः मानव पेपिल्लोमैविरस् नामक विषाणु की कोई प्रजाति इसका कारण होती है। लगभग दस प्रकार के मस्से होते हैं। मस्से संक्रमण से हो सकते हैं और शरीर में वहाँ प्रवेश करते हैं जहाँ त्वचा कटी–फटी हो। प्रायः ये कुछ माह में स्वयं समाप्त हो जाते हैं किन्तु कभी–कभी वर्षों तक बने रह सकते हैं या पुनः हो सकते हैं। शरीर पर अनचाहे मस्सों के उग जाने से मन से बार–बार यही आवाज आती है कि इन मस्सों से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है। ये मस्से आपकी सुंदरता में धब्बा बन कर आपको परेशान कर रहे हैं तो इन आसान उपायों की सहायता से आप इनसे छुटकारा पा सकते हैं।

● रोज दो–तीन बार प्याज का लेप मस्सों पर करने से ये मस्से जड़ से खत्म हो जाएंगे। प्याज को काट कर मस्से पर घिसना भी लाभप्रद है। ● शरीर की त्वचा पर यदि छोटे–छोटे काले मस्से हो गए हों तो उन पर काजू के छिलकों का लेप लगाने से मस्से साफ हो जाते हैं।

● चूना और घी एक समान मात्रा में लेकर दोनों को खूब फेंटकर सुरक्षित रखें। उसे दिन में 3–4 बार मस्सों पर लगाएं। उससे मस्से जड़ से हट जाएंगे और दोबारा नहीं होंगे।

● सोडा कास्टिक 6 ग्राम को 250 ग्राम की बोतल में घोलकर सुरक्षित जगह पर रख दें। सावधानी से रूई की सहायता से मस्सों पर लगाएं।

मस्सों को दूर करने के लिए यह रामबाण दवा है।

● बी काम्पलेक्स, विटामिन ए, सी, ई युक्तआहार के सेवन से मस्सों को दूर किया जा सकता है। मस्सों से छुटकारा पाने के लिए पोटेशियम बहुत लाभदायक है। पोटेशियम बहुत सी साग–सब्जी और फलों में पाया जाता है। जैसे सेब केला, अंगूर, आलू, मशरूम, टमाटर, पालक इत्यादि।

● खट्टी सेब का रस मस्सों पर लगाने से मस्सों के छोटे–छोटे टुकड़े होकर गिर जाएंगे।

● मुहासे या मस्से हों तो फ्टिकरी और काली मिर्च आधा–आधा ग्राम पानी में पीसकर मुहा पर मलने से लाभ होता है।

● बरगद के पेड़ के पत्तों का रस मस्सों के उपचार के लिए बहुत ही असरदार होता है। इस प्रयोग से त्वचा सौम्य हो जाती है और मस्से अपने आप गिर जाते हैं।

● एक चम्मच कोथमीर के रस में एक चुटकी हल्दी डालकर सेवन करने से मस्सों से राहत मिलती है।

नुस्खे आजमाएं, लाभ उठाएं

● भोजन में घी, दूध, चावल, उड़द, नारियल, मलाई, मक्खन, शहद, मौसमी फल, हलवा, हरी साग–भाजी, टमाटर, गाजर, आंवला आदि का सेवन करना चाहिए।

● बादाम का हलवा, दूध में पकाया हुआ छुहारा, मीठा अनार, प्याज का रस, नारियल की गिरी और दूध की खीर, उड़द दाल का लड्डू, गन्ना रस, सौंठ और काली मिर्च तथा मैथी का लड्डू बहुत फायदेमंद है। योग्य वैद्य की सलाह अवश्य लेनी चाहिए, ताकि अपने शरीर के अनुकूल पथ्य–अपथ्य का चयन किया जा सके।

● चिकनाईयुक्त, मधुर, लवण और अम्ल रस वाले पदार्थ का सेवन करके अपना स्वास्थ्य बनाए रखें। बासी, दुर्गंधयुक्त अधिक चटपटे मसालेदार खानपान से बचना ही श्रेयस्कर है।

● ठीक समय पर, चबा–चबाकर प्रसन्नता पूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन के पूर्व नींबू पानी और भोजन के पश्चात छाछ पीना लाभदायक होता है।

● रूखे, कटु–तिक्त–कषाय, अति शीतल और वात प्रधान भोज्य पदार्थ न खाएं। अन्यथा जोड़ों के दर्द, गठिया और सायटिका से पीड़ित हो सकते हैं। इसी प्रकार अधिक खटाई से भी बचें, ताकि खांसी–सर्दी, जुकाम, नजला आदि से बचाव हो सके। नींबू और ताजा दही वर्जित नहीं है।

● अधिक देर तक भूखे न रहें, क्योंकि जठराग्नि की प्रबलता के कारण यथा समय भोजन नहीं करने से यह अग्नि शरीर की धातुओं को जला डालती है, जिससे जीवन शक्ति का क्षय होता है।

● सेहत बनाने के लिये प्रतिदिन स्नान भी जरूरी है। कुछ लोग ठंड के डर से कई दिन तक नहाते नहीं, यह उचित नहीं। पानी कुनकुना कर लेना चाहिए। अत्यधिक ठंडा और अधिक गर्म पानी नुकसान पहुंचाता है।

● मल–मूत्र विसर्जन में आलस्य नहीं करना चाहिए। रात को सिर ढंककर सोना भी उचित नहीं होता।

रसोई टिप्स

● सब्जी में मिर्च अधिक होने पर थोड़ा दही डालकर पका दें।

● नींबू की बाहरी सतह पर तेल लगाकर फ्रिज में रखें। नींबू अधिक दिनों तक ताजा बने रहेंगे।

● यदि दो गिलास आपस में फंस गए हैं, तो उन्हें रातभर फ्रिज में रखें सुबह आसानी से अलग हो जाएंगे।

● चावल बनाने से पहले यदि नमक मिले पानी भिगोकर रखा जाए। तो चावल सफेद बनेंगे।

● ब्रेड क्रंब्स की जगह सूजी या पिसे मुरमुरे काम में लाए जा सकते हैं।

● दाल या तरकारी के जल जाने पर टमाटर के छोटे टुकड़े करके साथ में जीरे का बघार डालने से जलने की बदबू दूर हो जाती है।

● यदि कुचले आलू बहुत नर्म हो जाएं, तो सफेद ब्रेड का चूरा डालकर अच्छी तरह मलिए, जिससे आलू सूखे व कुरकुरे हो जाएंगे।

● घी में पान का पत्ता या नमक का टुकड़ा डाल देने से घी बहुत दिनों तक रखा जा सकता है।

● मूली की सब्जी बनाते समय थोड़े पालक के पत्ते डालने से सब्जी जल्दी पकती है।

● जब भी दही बड़े बनाने हों तो उसके लिये हमेशा नयी दाल का प्रयोग करें। पुरानी दाल के बड़े बनाने में बड़े मुलायम नहीं बनेंगे।

● उबलते हुए दूध में चीनी कभी न मिलाएं इससे दूध फटने का खतरा रहता है।

● सब्जी जल्दी पक जाये और उसकी रंगत बनी रहे। इसके लिये सब्जी पकाते समय उसमें एक चुटकी चीनी डाल दें।

● यदि टमाटर पिलपिले हो रहे हों तो इन्हें बर्फ के पानी में कुछ देर रख दें। इससे टमाटरों में कड़ापन आ जायेगा।

● नमक में अक्सर सीलन आ जाती है। इससे बचने के लिये नमक में कुछ चावल के दाने डाल दें।

पाक्षिक पंचांग

9 फरवरी से 22 फरवरी 2026 तक
विक्रम संवत् 2082
फाल्गुन कृष्ण 1 से फाल्गुन शुक्ल 5 तक

दि.	माह	वार		तिथि	त्यौहार
9	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण	8	सीताष्टमी
10	फरवरी	मंगल	----------	8	
11	फरवरी	बुध	----------	9	
12	फरवरी	गुरु	----------	10	
13	फरवरी	शुक्र	----------	11	विजया एकादशी
14	फरवरी	शनि	----------	12	प्रदोष व्रत
15	फरवरी	रवि	----------	13	महाशिवरात्रि
16	फरवरी	सोम	----------	14	
17	फरवरी	मंगल	----------	30	अमावस्या पंचक 9.30 दिन से
18	फरवरी	बुध	फाल्गुन शुक्ल	1	पंचक
19	फरवरी	गुरु	----------	2	पंचक
20	फरवरी	शुक्र	----------	3	पंचक
21	फरवरी	शनि	----------	4	विनायकी चतुर्थी, पंचक समाप्त 8.12 रात्रि
22	फरवरी	रवि	----------	5	

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

श्रीनिंबेश्वर महादेव पशु मेला 13 फरवरी से

पशुपालन मंत्री ने लिया तैयारियों का जायजा

जयपुर। पशुपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत की पहल पर पशुपालन विभाग की ओर से पाली जिले की सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के साण्डेराव में 33 साल बाद पुनः श्रीनिंबेश्वर महादेव पशु मेला आयोजित किया जाएगा। जिला प्रशासन पाली 13 से 17 फरवरी-2026 तक होने वाले इस पांच दिवसीय पशु मेले की तैयारियों को लेकर जुटा हुआ है। मेले के भव्य आयोजन को लेकर पशुपालन विभाग सहित 17 विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इन तैयारियों का जायजा लेने के लिए पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान मंत्री श्री जोराराम कुमावत प्रशासनिक अधिकारियों

के साथ मौके पर पहुंचे।

उन्होंने बताया कि पशुपालकों को पानी, बिजली पशु चिकित्सा व टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी, इसके लिए पशुपालन विभाग को निर्देशित किया गया है। श्री कुमावत ने कहा कि मेले में पशुपालन विभाग की ओर से पशुपालकों के ज्ञानवर्धन के लिए प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत की आज भी ज्यादातर आबादी या तो खेती पर निर्भर रहती है, या फिर उनका गुजारा पशुपालन के जरिए होता है। ऐसे में क्षेत्र के लोगों को एक सही बाजार दिया जा सके, इसलिए सांडेराव में पशु मेला आयोजित कराया जा रहा है। इस पशु मेले में गाय, भैंस, बकरी, ऊंट, घोड़े और अन्य पशुओं को खरीदा और बेचा जा सकेगा। मेले में पशु पालन करने वाले लोगों को कई उन्नत नस्लों को खरीदने और बेचने का मौका मिलेगा। मेले में पशु की कीमत काफी कम रखी जाती है, ताकि अधिक से अधिक पशुपालकों को मेले तक लाया जा सके।

श्री कुमावत ने कहा कि इस मेले में पशुओं की देखरेख, खानपान, ग्रामीण कला और खेती से जुड़े उपकरण भी बेचे जा सकेंगे। साथ ही किसानों को खेती की नई तकनीक से भी रूबरू कराया जाएगा। यह पशु मेला कला, संस्कृति और पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होगा। इसके जरिए विदेशी पर्यटकों को देश की ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति को जानने का मौका मिलेगा। इस दौरान मंत्री श्री कुमावत ने मेले के पोस्टर व बैनर का विमोचन भी किया।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक

- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

केंद्रीय बजट 2026-27: दुनिया के बाजारों से मुकाबला करने खेती में नई पहल

● शशिकांत त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार
मो.: 9893355391

केंद्रीय बजट 2026-27 ने कृषि क्षेत्र को भारत के विकास और समावेशन एजेंडा के केंद्र में रखा है। सरसरी तौर पर इस बार बजट में खेती को आजीविका, खाद्य सुरक्षा और गाँव-देहात की समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आने वाले समय में आने वाली कई नई पहल के बारे में बताया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रौद्योगिकी आधारित नवाचार, उच्च-मूल्य वाली फसलों के लिए लक्षित समर्थन और किसानों, महिलाओं तथा संबद्ध क्षेत्रों के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

मछली पालन और जल-आधारित खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 500 जलाशयों और अमृत सरोवरों के एकीकृत विकास की योजना बनाई है। साथ ही, स्टार्ट-अप और महिला-नेतृत्व वाले समूहों के माध्यम से तटीय मछली पालन मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने का लक्ष्य रखा गया है। मछली किसान उत्पादक संगठनों को प्रोत्साहित कर बेहतर बाजार पहुंच और आय स्थिरता सुनिश्चित की जाएगी।

फसल विविधीकरण पर भी जोर दिया गया है। तटीय क्षेत्रों में नारियल, चंदन, कोको और काजू की खेती को बढ़ावा मिलेगा, जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में बादाम, अखरोट और पाइन नट्स पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। नारियल संवर्धन योजना के तहत पुराने पेड़ों को नई किस्मों से बदलने की पहल होगी। वहीं, काजू और कोको के लिए विशेष कार्यक्रम भारत को 2030 तक आत्मनिर्भर और वैश्विक प्रतिस्पर्धी बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

प्रौद्योगिकी एकीकरण के तहत 'भारत-विस्तार' नामक एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित प्लेटफार्म होगा जो एग्रीस्टैक पोर्टल और भारतीय कृषि अनुसंधान को जोड़कर किसानों को खेती बाड़ी के बारे में सलाह देगा। यह पहल उत्पादकता बढ़ाने और खेती में जोखिम कम करने में मदद करेगी।

वित्त मंत्री ने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए शी मार्ट्स स्थापित किए जाएंगे। ये समुदाय-स्वामित्व वाले खुदरा केंद्र महिला उद्यमियों को बाजार संपर्क, वित्तीय साधन और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति प्रदान करेंगे।

अपने बजट भाषण में वित्त मंत्री सीतारमण ने पशुधन क्षेत्र को भी प्राथमिकता दी है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम, ऋण-संबद्ध सब्सिडी और पशुधन उद्यमों का आधुनिकीकरण डेयरी और मुर्गी पालन के लिए सरकार एकीकृत मूल्य श्रृंखला बनाएगी। पशु चिकित्सा शिक्षा और बुनियादी ढांचे का विस्तार पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता को बेहतर बनाए जाने पर सरकार ज़ोर देगी।

वित्त मंत्री का बजट में खेती पर नजरिया केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्रांडिंग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा तक फैला हुआ है। काजू और कोको को प्रीमियम निर्यात के रूप में बढ़ावा देकर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित प्रणालियों को अपनाकर, भारत का लक्ष्य कृषि को मूल्य-वर्धित और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त क्षेत्र में बदलना है। यह बजट पारंपरिक ताकतों को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए किसानों और महिलाओं को सशक्त बनाता है तथा विविधीकरण के माध्यम से खेती में लचीलापन लाना है। फौरी तौर पर किसान भाई बजट को भले ही आकर्षक न माने लेकिन आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, आदि भारतीय खेती में बहुत खास होंगे।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम .....पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत
भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

'वीबी-जी राम जी' में

60 दिन कृषि के लिए, किसको होगा लाभ ?

● राजेश दुबे

कृषि में श्रम की उपलब्धता सुनिश्चित होगी

हाल ही में समाप्त हुए वर्ष 2025 के अंतिम दिनों में केंद्र सरकार ने अपने महत्वाकांक्षी विधेयक 'वीबी-जी राम जी' को विधिवत लागू करने सफलता पाई है। इस विधेयक को लेकर राजनीतिक गलियारों में काफी हलचल रही और इसके लाभ और नुकसान को लेकर केंद्र को विरोध और चिंताओं का सामना करना पड़ा, जो अभी भी जारी है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के स्थान पर कुछ संशोधन के बाद लागू की जा रही इस योजना के समर्थन में केंद्र सरकार का एक दावा यह भी है कि इससे कृषि में श्रम की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। क्योंकि इस योजना के अंतर्गत कृषि के बुआई और कटाई के मौसम में 60 दिनों तक कोई काम नहीं किया जायेगा। जिसके कारण इस दौरान किसानों को कृषि कार्यों के लिए श्रमिकों की उपलब्धता सुगमता से हो सकेगी। इस तरह कृषि क्षेत्र में उत्पन्न हो रहे श्रम संकट से निपटने में आसानी होगी। इन 60 दिनों में योजना के तहत कोई भी सार्वजानिक निर्माण कार्य नहीं होंगे।

श्रम की 60 दिनों की अवधि

राज्य सरकारें अपने कृषि जलवायु क्षेत्र, स्थानीय फसल चक्र और कृषि श्रम की आवश्यकता के अनुसार 60 दिनों की अवधि को अग्रिम रूप से अधिसूचित करेंगी। जो जिलों, ब्लॉक और ग्राम पंचायतों के अनुसार भिन्न भी हो सकती है। राज्य सरकार के अधिकारियों को कार्य योजना बनाने, मंजूरी देने और क्रियान्वयन के समय इस अधिसूचित अवधि को विशेष रूप से ध्यान में रखना होगा।

- 'मनरेगा' की जगह 'वीबी-जी राम जी'
- 100 की जगह 125 दिन की रोजगार गारंटी
- कृषि कार्यों के लिए 60 दिन योजना में काम बंद

कृषि श्रमिकों की आवश्यकता बनी रहती है

केंद्र सरकार ने केवल कुछ रिपोर्ट के आधार पर पूरे वर्ष में केवल 60 दिनों को ही कृषि कार्य की चरम परिस्थिति माना है जबकि सामान्य रूप से भी देखा जाये तो भारतीय कृषि में रबी और खरीफ दो मुख्य सीजन माने जाते हैं, अर्थात् चार बार तो बुआई और कटाई की ही परिस्थितियां बनती हैं। इसके अलावा भी कई कृषि कार्यों जैसे सिंचाई, निंदाई, खाद देने, दवाई देने आदि कार्यों के लिए भी कृषि श्रमिकों की आवश्यकता होती है। यहाँ ये भी उल्लेखनीय होगा कि आधुनिक कृषि में तो अब लगभग पूरे वर्ष फसल चक्र चलता रहता है, जिसके लिए निरंतर कृषि श्रमिकों की आवश्यकता बनी रहती है। ऐसे में 60 दिन की बंदिश की व्यवस्था योजना के समर्थन में केंद्र सरकार की जुमले बाजी ही लगती है। इसका दूसरा पहलू देखें तो कृषि में बढ़ते मशीनीकरण के फलस्वरूप कृषि कार्यों में लगे श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं। केंद्र सरकार ही कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। जिसका लाभ लेते हुए किसान श्रमिकों पर अपनी निर्भरता को कम कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना इन श्रमिकों के लिए राहत का काम करती है। लेकिन 60 दिन की बंदिश एक ओर तो उन्हें राहत से वंचित करेगी वहीं कृषि की चरम परिस्थितियों में उनकी उचित श्रमिक दर को भी प्रभावित करेगी। इसका मतलब श्रमिकों के लिए 'एक तो दुबले,ऊपर से दो आषाढ़' जैसी स्थिति निर्मित हो जाएगी।

दो दशकों से चल रही मनरेगा योजना को कुछ नए प्रावधानों और नए नाम विकसित भारत – रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) (VB-G RAM G) के साथ प्रस्तुत करने का केंद्र सरकार यह दांव किसान, कृषि और श्रमिक में से किसके लिए कितना लाभकारी होगा, यह तो आने वाले समय में ही पता चलेगा।

आम बजट : किसानों के हितों की अनदेखी !

● मधुकर पवार, मो.: 8770218785

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और करीब 60 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी रूप से कृषि पर आश्रित है। करोड़ों परिवारों की आजीविका कृषि से सीधे जुड़ी हुई है। पिछले सप्ताह केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में पेश किये गए आम बजट 2026-27 से किसानों को बड़ी उम्मीद थी कि सरकार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), सिंचाई, किसान क्रेडिट कार्ड से ऋण सीमा और ब्याज दर में कमी तथा फसल बीमा के बारे में भी कुछ राहत देंगी लेकिन किसानों की अपेक्षाओं और घोषणाओं के बीच एक स्पष्ट अंतर दिखाई दे रहा है। बजट में किसानों के लिए अवसर तो दिखाई दे रहे हैं, पर सुरक्षा-कवच को और मजबूत करने की जरूरत महसूस की जा रही है।

भारत की कृषि आज भी असुरक्षा के साए में खड़ी है। देश की लगभग 60 प्रतिशत कार्यशील आबादी खेती पर निर्भर है, लेकिन राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 18-19 प्रतिशत तक सीमित रह गया है। यह असंतुलन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नीतिगत प्राथमिकताओं की कमियों को उजागर करता है। आम बजट 2026-27 में सरकार ने कृषि को आधुनिक, तकनीक- आधारित और उच्च-मूल्य फसलों से जोड़ने की बात तो की, लेकिन जब सवाल किसानों की सुरक्षा के कवच—आय, मूल्य, सिंचाई और जोखिम का आया तो बजट कई मोर्चों पर अधूरा नजर आया।

प्रत्यक्ष आय सहायता के रूप में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना आज भी छोटे और सीमांत किसानों के लिए नकदी का अहम सहारा है। योजना से 11 करोड़ से अधिक किसान परिवार जुड़े हैं। लेकिन महंगाई और खेती की लागत जिस रफ्तार से बढ़ी है, उसके मुकाबले योजना की राशि में वर्षों वृद्धि नहीं की गई है। बजट में योजना की निरंतरता का आश्वासन है, पर राशि बढ़ाने या कवरेज विस्तार पर कोई ठोस कदम नहीं है। नतीजतन, आय-सुरक्षा का यह कवच समय के साथ कमजोर होते जा रहा है जबकि किसानों की जरूरतों में जबर्दस्त इजाफा हो गया है। इसे देखते हुए वर्तमान में दी जा रही सहायता नाकाफी है। इसे तुरंत दोगुना करने की आवश्यकता है।

खाद, बीज और दवाईयों की बढ़ती कीमतों के साथ मजदूरों की कमी से कृषि की लागत में भी साल-दर-साल वृद्धि हो रही है। अधिकांश किसान फसल बेचकर ही अपने परिवार की जरूरतें पूरी करने के साथ अगली फसल के लिए भी व्यवस्था करते हैं। लेकिन जब उसे फसल की न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम कीमत मिलती है तो उसके लिए कृषि लाभ का धंधा तो दूर, घाटे का धंधा बन जाती है। सरकार भी जानती है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों की लागत सुरक्षा का प्रमुख औजार है। सरकार हर साल न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करती है और खरीद की बात भी करती है, लेकिन अधिकांश कृषि उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य बमुश्किल से मिल पाता है। मध्यप्रदेश में सोयाबीन की फसल के दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मिले तो प्रदेश सरकार ने भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को हो रहे नुकसान की भरपाई की और करोड़ों रूपये की राशि का किसानों को भुगतान किया गया। यह भी सच है कि किसान अक्सर खुले बाजार में न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दाम पर फसल बेचने को मजबूर होते हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य को लंबे समय से कानूनी दर्जा देने की मांग पर बजट में कोई उल्लेख नहीं किया गया। इससे यह संदेश गया कि कृषि उपज की मूल्य-सुरक्षा अभी भी प्रशासनिक विवेक पर निर्भर है, कानून के भरोसे पर नहीं।

फसल खराब होने पर किसान की आखिरी उम्मीद फसल बीमा ही होती है। लेकिन प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर किसानों की शिकायतें जैसे देर से दावा निपटान, नुकसान आकलन में पारदर्शिता की कमी अब भी बनी हुई हैं। बजट में

योजना की निरंतरता तो है, पर भरोसेमंद सुधारों का खाका नहीं है। कर्ज के मोर्चे पर भी तस्वीर चिंताजनक है। संस्थागत ऋण की बात के बावजूद बड़ी संख्या में किसान आज भी महंगे गैर-संस्थागत कर्ज पर निर्भर हैं। कर्ज- पुनर्संरचना, ब्याज राहत या संकटग्रस्त किसानों के लिए विशेष सुरक्षा पैकेज पर बजट में कोई उल्लेख नहीं है। बजट में उर्वरक सब्सिडी, पशुपालन, मत्स्य पालन और तकनीकी पहलों पर खर्च बढ़ता दिखाई दे रहा है, लेकिन प्रत्यक्ष किसान-सुरक्षा से जुड़े उपाय कमजोर हैं। यह विरोधाभास बताता है कि सरकार दीर्घकालिक सुधारों की बात तो कर रही है, पर तत्काल सुरक्षा कवच को मजबूत करने से हिचक रही है जबकि सरकार भी जानती है कि देश के 80 से 85 प्रतिशत लघु और सीमांत किसान हैं जिन्हें आर्थिक सुरक्षा कवच की सख्त जरूरत है। कृषि को आधुनिक बनाना जरूरी है, लेकिन सुरक्षा के बिना सुधार अधूरे हैं। जब तक आय-सुरक्षा को मजबूत नहीं किया जाता, न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी बाध्यता नहीं मिलती, सिंचाई का दायरा व्यापक नहीं होता और फसल बीमा व कृषि ऋण में राहत नहीं मिलती तब तक किसान आत्मनिर्भर नहीं होगा और वह असुरक्षित ही रहेगा।

बजट की सुर्खियाँ बहुत, किसान की हिस्सेदारी कितनी ?

● सचिन बोंद्रिया

इंदौर (कृषक जगत)। *केंद्रीय बजट 2026-27 पेश हो चुका है। हर बार की तरह इस बार भी बजट की सुर्खियों में विकास, तकनीक, निवेश और आत्मनिर्भर भारत जैसे बड़े शब्द प्रमुख रहे, लेकिन सवाल वही पुराना है-इस बजट में किसान वास्तव में कहाँ खड़ा है? बजट भाषण में कृषि क्षेत्र का उल्लेख अवश्य किया गया, उच्च-मूल्य वाली फसलों, कृषि विविधीकरण, पशुपालन, मत्स्य पालन और निर्यात बढ़ाने की बात भी कही गई, परंतु सीधे किसान को मिलने वाली राहत और आय सुरक्षा पर ठोस घोषणाएँ अपेक्षा के अनुरूप नहीं दिखीं।*

सरकार ने यह जरूर कहा कि खेती को लाभ का व्यवसाय बनाया जाएगा, लेकिन उत्पादन लागत, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), फसल नुकसान और बाज़ार की अनिश्चितता जैसे ज़मीनी मुद्दों पर किसान आज भी असमंजस में है। बजट में तकनीक और डिजिटल कृषि की बात तो हुई, पर छोटे और सीमांत किसानों तक इसका लाभ कैसे पहुँचेगा, इस पर स्पष्ट रोडमैप नज़र नहीं आता।

खेती के साथ पशुपालन और मत्स्य पालन को आय के अतिरिक्त स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन इन क्षेत्रों में लगे किसानों के लिए बीमा, ऋण और बाज़ार समर्थन को लेकर बजट मौन दिखाई देता है। वहीं, प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन से जूझ रहे किसानों के लिए भी किसी विशेष पैकेज की घोषणा नहीं की गई।

किसान संगठनों का मानना है कि बजट में कृषि का ज़िक्र होना ही पर्याप्त नहीं है। किसान की आय, सुरक्षा और सम्मान को केंद्र में रखे बिना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत नहीं किया जा सकता। आज भी देश का किसान यही पूछ रहा है कि जब बजट की सुर्खियाँ इतनी बड़ी हैं, तो उसकी हिस्सेदारी आखिर कितनी है?

कुल मिलाकर, यह बजट नीति और संभावनाओं की बात तो करता है, लेकिन ज़मीनी किसान को तत्काल राहत देने के लिहाज़ से अधूरा माना जा रहा है। आने वाले समय में यह देखना अहम होगा कि बजट की घोषणाएँ खेत तक कब और कैसे पहुँचती हैं।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं
नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!